## अध्याय : 3

## हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में जीवन की विभिन्न विसंगतियाँ

MAH. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

## अध्याय : 3

## हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में जीवन की विभिन्न विसंगतियाँ

### भूमिका

वर्तमान में मनुष्य जीवन पर विसंगतियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य चाहे वह पौर्वात्य हो या पाश्चात्य उसमें विसंगति किसी न किसी रूप में देखी जा सकती ही है। मनुष्य आज यह भूल गया है कि वह किस तरह का आचरण कर रहा है। उसे जीवन में वह चाहता तो है संगति लेकिन उसमें वह विसंगत आचरण ही करता रहा है। असंगति मनुष्य जीवन के साथ इतना घनिष्ठ संबंध जोड़ चुकी है कि वह चाहकर भी उससे अलग नहीं हो सकता। आज का आदमी अंदर से एक और बहार से एक नजर आता है। वह सिर्फ अपना स्वार्थ जताना चाहता है। उसमें समय की पाबंदी तो नहीं है। दूसरों को वक्त देने वाला खुद वक्त पर हाजिर नहीं रहता। आज की समाज व्यवस्था रखनेवाली सभी संस्थाएँ, स्वार्थी, निकम्मी बन चुकी हैं। इसका कारण विसंगति ही है। बड़े, बड़े कारखानों में उपर से तो दिखाया जाता है कि यहाँ मनुष्य उपयोगी वस्तुएँ बनायी जाती हैं। लेकिन अंदर से स्मग्लींग करने के लिए बड़े-बड़े गोदामों का उपयोग किया जाता है। प्रतिदिन काम कर अपनी और अपने घर का खर्चा देखने वाला मनुष्य पहले शराब पीता है, जुआ खेलता है और बाद में घर का खर्चा देखता है। यहाँ उसे शराब और जुआ ही विशेष महत्वपूर्ण लगता है। ऐसे आदमियों का असली जीवन प्रणाली क्या होनी चाहिए ? वह किस तरह जीवन-यापन करते हैं, इसरो मालूम होता है कि विसंगति ने मनुष्य जीवन पर कितना गहरा असर छोड दिया है।

समसामयिक युग में तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असंगतियों ने अपना प्रभाव स्थापित किया है। पुलिस यंत्रणा निकम्मी, भ्रष्टाचारी और रिश्वतखोर बन चुकी है। नेता लोगों की कथनी और करनी में काफी अंतर होता है। अपने आपको सभ्य

और सुसंस्कृत समझनेवाले उच्चवर्ग के सुविधाभोगी लोगों में ही असभ्यता और पशुता अधिक दिखाई देती है। कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारी निकम्मे, कामचोर, रिश्वतखोर, निष्क्रिय, भ्रष्टाचारी बन चुके हैं। पारिवारिक संबंधों में भी बिखराव दिखाई देता है। आज पति-पत्नी के बीच में अक्सर झगडे होते रहते हैं। इसी तरह राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, नैतिक और स्त्री-पुरूषों के भावनात्मक संबंधों में भी विसंगति देखने को मिलती है। जीवन की यही विसंगतियाँ हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में विभिन्न रूपों से दृष्टिगोचर हुई हैं।

1· यांत्रिकता और परवशता

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी होने के कारण वह एक-दूसरे पर अवलंबित रहना पसंद करता है। क्योंकि जीवन बिताने के लिए उसे समाज के किसी न किसी मनुष्य का सहारा लेना पडता है। परिणामस्वरूप वह परावलंबी भी है। अतः अपना जीवन व्यतीत करने के लिए उसको कोई-न-कोई काम करना ही पड़ता है। अतः वह अफसर और मालिक जैसे लोगों के अधीन रहने के लिए विवश बन गया है। व्यक्ति को पराधीनता जीवित रहने के लिए अंधा, गूंगा और बहरा भी बना देती है। बड़े-बड़े लोग कमजोर, गरीब लोगों को अपनी इच्छा के अनुरूप आचरण करने के लिए विवश करते हैं। अतः गरीब और कमजोर लोग ऐसी स्थिति में एक यंत्र जैसा बर्ताव करने के लिए मजबूर हुए दिखाई देते हैं।

वर्तमान का व्यक्ति यंत्र जैसा आचरण करने के लिए मजबूर हुआ है। इसका कारणहै नौकरी की परवशता। व्यक्ति को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए अपने अफसर की ऑर्डर माननी पडती है। उसकी आर्डर उचित हो या अनुचित यह सोचना उसके जीविका के लिए हानीकारक होता है। अतः उसे आर्डर के अनुसार ही कार्य करना पडता है। व्यक्ति की इच्छा का इसमें कोई महत्त्व नहीं रहता। अफसर की इच्छा ही उसकी इच्छा ऐसा सूत्र बन गया है। नौकरी पेशा करनेवाले व्यक्ति की यह परवशता व्यक्ति को संवेदनशुन्य बना देती है। फलतः उसके भावनात्मक संबंधों में भी यंत्रो की तरह संवेदनशून्यता आयी है। यही संवेदनशून्यता उसको यंत्रों की तरह आचरण करने के लिए विवश करती है। हमीदुल्ला के असंगत नाटक व्यक्ति के इसी विसंगति को उल्लेखित करते हैं।

हमीदुल्ला ने "समय सन्दर्भ" नाटक में मनुष्य किस तरह यंत्रों जैसा बर्ताव करने लगा है उसी को उभारा है। इस नाटक का बोस मशीनी मानव का निर्माणकरता है। और वह अपने सज्हन पर गर्वित भी है। वह मशीनी मानवों में इतना मशगुल होता है कि उसे अपने घर-परिवार का ध्यान तक नहीं होता। वह भी मशीनी की तरह संवेदनशून्य बन जाता है। वह अपनी पत्नी लिली को भी भूल जाता है और मशीनी मानव मनुप्रिया से वह अपने नीजी काम करता है। अतः बोस का ऐसा करना उसका मानवीयता को भूलना और मशीनी की तरह बर्ताव करना वर्तमान के यांत्रिकता को उभारता है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में मनुष्य जीवन पर मशीनों का गहरा प्रभाव पडा है।

हमीदुल्ला का "सुदामा दिल्ली आये" नाटक इसी यांत्रिकता को उल्लेखित करता है। लेखकीय निवेदन में हमीदुल्ला ने कहा है कि, "प्रस्तुत नाटक में मानव मूल्यों के -हास, आज की मशीनी जिंदगी, आदमी की स्वार्थपरता और उसकी बेचारगी को चित्रित किया गया है। आज की यांत्रिक व्यवस्थाओं ने आदमी को इतना आत्मकेंद्रित बना दिया है कि वह स्वयं के स्वार्थ की परिधि से परे जाकर कुछ देख ही नहीं पाता।"[1] नाटक में घर, मालिक, जरीवाला आदि पात्रों के द्वारा आज के यांत्रिक युग में जीने वाले स्वार्थी लोगों का उल्लेख किया है। और सुदामा जैसे सामान्य व्यक्ति की परवशता के कारण कितना घिनौना जीवन गुजरना पड़ रहा है इसका वर्णन किया है। जरीवाला स्वार्थ के लिए सुदामा का उपयोग करना चाहता है। सुदामा आज यांत्रिकता के कारण बेबस, गरीब होने के कारण दिल्ली आता है। लेकिन वहाँ भी वह परवशता पाता है। उसे कोई भी व्यक्ति गोपाल से मिलने नहीं देती। इससे स्पष्ट होता है कि आज का मनुष्य यांत्रिकता के कारण अपने आचार, विचार, नीतिमूल्यों को भूलकर यंत्र जैसा निर्जीव नीरस बन गया है।

हमीदुल्ला के "उलझी आकृतियाँ" नाटक में यांत्रिक जीवन के कारण आज के व्यक्ति में छायी परवशता का चित्रण किया है। इस नाटक के सभी पात्र यंत्र जैसा कार्य करते नजर आते हैं। उन सभी पात्रों मे परवशता पायी जाती हैं। वे परवशता के कारण अपना अस्तित्व भूल चुके हैं। सुनीता ने अपने पति विकास से

ही परवशता पाती है। विकास सुनीता का एक यंत्र जैया उपयोग करना चाहता है। वह उसे ट्रान्सफर करवाने के लिए बोस के पास भेजना चाहता है। सुनीता को यह सह नहीं जाता। वह विकास को छोड़कर चली जाती है। अतः विकास द्वारा ऐसा करना सुनीता का एक यंत्र के सादृश्य बना दिया जाता है। जब चाहे उससे कोई भी काम किया जाय।

"हरबार" नाटक में भी हमीदुल्ला ने वर्तमान की यांत्रिकता और परवशता को अंकित किया है। आज के वैज्ञानिक युग में किस तरह व्यक्ति पिघल रहा है, और वह किस तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहा है इस नाटके पात्र शंकिता संशय और गंगे शंकिता स्पष्ट होता हैं। स्वामीनाथन अपनी बढती के लिए शंकिता का एक यंत्र जेसा उपयोग करता हे। शंकिता अपने पति के नपुसकत्व के कारण स्वामीनाथन के यहाँ कार्यरत होती है। स्वामीनाथन उसको अफसर लोगों के खुशी के लिए उसको अपने यहाँ रखता है। अतः शंकिता को परवशता के कारण एक यंत्र जैसा ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। संशय भी अपने सारे आदर्श छोड़कर स्वामीनाथन के यहाँ काम करने के लिए विवश होता है।

हमीदुल्ला का "अपना-अपना दर्द" नाटक यांत्रिकता के कारण मनुष्य में छायी परवशता को व्यंजित करता है। इस नाटक की मधु अभाव और मँहगाई के कारण अपने माता-पिता से ही परवशता पाती है। इसी कारण मामी के यहाँ रहती है लेकिन उसे मामी भी अपने घर से निकल जाने के लिए कहती है। इसी परवशता के कारण बिहारी उसका उपयोग रूपये कमाने वाले यंत्र जैसा करता है। इसके साथ साथ डॉ·वीरने भी अपने स्वार्थपूर्ति के लिए मधु को अपने यहाँ आश्रय देता है। लेकिन उसकी पत्नी वापस आतेही वह भी उसे घर से निकाल देता है। नाटक के अंत में मधु के संवादों द्वारा वर्तमान की यांत्रिकता और उससे निर्माण होने वाली परवशता का चित्रण हुआ है- "ओह भगवान्! ये मजबुरियाँ। यह भीड। सड़क पर हर सवारी तेजी से गुजर जाती है। आदमी अन्धे की तरह आँखे झपकता रह जाता है। मैने पहचान लिया, यह तुम थे, बिहारी! और वीरेन, तुम भी। मम्मी-डैडी, सब छोडकर चले गये। हलक् सूख गया है। सामने प्याऊ पर प्यासों की यह लम्बी कतार!···वहाँ बस-स्टॉप पर वह लड़का उस लडकी को छेड रहा है।···और उस भीड में····वहाँ चौराहे पर अन्धा बूढ हाथ फैलाये खड़ा है।···सब

अपनी-अपनी सलीब ढो रहे हैं। अपना-अपना दर्द। बहुत थक गयी हूँ।...टूट गयी हूँ।"[2] अतः स्पष्ट होता है कि यांत्रिकता के कारण व्याप्त दरिन्दों से मनुष्य स्नेह और आश्रय तो पा ही नहीं सकता। इसके साथ-साथ उनके स्वार्थ पूर्ति के लिए उसे अपना जीवन भी देना पडता है।

2· **भ्रष्टाचार**

वर्तमान काल में भ्रष्टाचार हर जगह पाया जाता है। आज का हर व्यक्ति भ्रष्टाचारी बन गया है। अपना स्वार्थ जताने के लिए सरकारी कार्यालयों, पुलिस, नेता, सभी भ्रष्टाचारी बन गये हैं। आज सरकारी कार्यालय में तो इतना भ्रष्टाचार बढ़ गया है कि हर काम वे अपना स्वार्थ हशील करके ही पूरा करते हैं। परिणामस्वरूप आज हर जगह रिश्वतखोरी, अवसरवादी वृत्ति आदि दिखाई देती हैं। कोई भी अफसर बिना रिश्वत के कोई काम नहीं करता। इसके साथ-साथ समाज की व्यवस्था देखनेवाली पुलिस यंत्रणा खोखली तथा निकम्मी बन गयी है। वह लाचार, विवश लोगों पर ही अपना जोम दिखाती है। देश के नेता अपने स्वार्थ के लिए, गरीब जनता का बलिदान लेते हैं और खुद एक राजा जैसा जीवन व्यतीत करते हैं।

हमीदुल्ला ने इसी भ्रष्टाचारी का चित्रण अपने नाटकों में किया है। उनका "दरिन्दे" नाटक आज के विकसित और स्वयं को सभ्य कहने वाले मानव पर सशक्त व्यंग्य करता है। मनुष्य को उसकी पाशविकता और अवसरवाद के कारण पशुओं से भी बर्बर सिध्द करता है। इस नाटक के प्रतिकात्मक पात्रों शेर, भालू और लोमडी आज के विकसित और स्वयं को सभ्य कहने वाले लोगों का पर्दाफाश करते हैं। इसके साथ-साथ नाटक का विक्षिप्त दार्शनिक आज के लोगों की नीतिमूल्यों को व्यंजित करता है। इस नाटक के नेता और चमचा के संवादों में आज की भ्रष्टाचारी वृत्ति दृष्टिगोचर होती है -

**नेता** : चमचे। चमचे।
(सभी पात्र अपनी-अपनी जगह फ्रीज हो जाते हैं।)

**नेता** : चमचे, कहाँ हो भाई ?

**चमचा** : इस बार कौन आफ़त आयी ?

**नेता** : देख रहे हो ?

**चमचा** : देख रहा हूँ।[3]

इससे पता चलता है कि अगर नेता लोगों पर कुछ आफ़त आती है तो वे उस आफत से ध्यान हटाकर अपने हीत की दृष्टि से देखते हैं। "नाटक में जन-प्रतिनिधियों ने अफसरों, दलबदलू नेताओं आदि की अमानवीयता को अपने साथ घटित घटनाओं के आधार पर व्यक्त किया है, क्योंकि भ्रष्टाचार और दुराचार की स्थिति प्रत्येक स्थल पर व्याप्त है।"[4]

"एक और युद्ध" नाटक में भी हमीदुल्ला ने भ्रष्टाचारी स्थिति का वर्तमान जीवन में संपूर्ण परिवेश के साथ चित्रण किया है। प्रत्येक क्षेत्र में छायी अराजकता, साहित्यकार, लेखकों, निर्देशकों और अवसरवादियों की भ्रष्टाचारी वृत्तियों, शहिदों की विधवाओं का निराश्रित जीवन, राजनेताओं के भ्रष्टाचार तथा न्याय और सत्य में भी आज भ्रष्टाचार किस प्रकार चल रहा है, इसका चित्रण हमीदुल्ला ने बडी खूबी के साथ किया है। इस नाटक का पात्र "आशा" अतिसंवेदनशील होने के कारण चारों और के भ्रष्ट परिवेश से विक्षिप्त हो उठती है। अंततः वह इलाह के लिए डॉक्टर के पास चली जाती है। लेकिन डॉक्टर भी भ्रष्टचारी वृत्ति का होने के कारण उसकी हत्या कर देता है।

### 3· <u>स्वार्थान्धता</u>

मानव वर्तमान जीवन में स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है। मनुष्य जीवन जीने के लिए कुछ करना चाहता है। अगर उसे कुछ करने के बाद भी कम पड़ने लगता है, तो वह स्वार्थ के लिए उन्मुख होता है। मनुष्य स्वार्थ के लिए घिनौने-से-घिनौने कार्य भी कर सकता है। स्वार्थ मनुष्य को अपने मूल्यों से विचलित करता है। परिणामतः मनुष्य स्वार्थ में नाते-रिश्तों को भूल जाता है। वह किसी से भी स्वार्थ के लिए कुछ भी करता है। हमीदुल्ला ने इसी स्वार्थान्धता को अपने "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में चित्रित किया है। इस नाटक के सुदामा के अलावा जरीवाला, धावक, रोजी, सूरक्षाकर्मी तथा मकान मालिक आदि के माध्यम से वर्तमान का मनुष्य स्वार्थ के लिए किस तरह पेश आते हैं यह दिखाया है। सुदामा एक गरीब, मजबूर, लाचार आदमी है, जो अपनी उपजीविका के लिए अपने मित्र गोपाल

से कुछ मदद माँगने दिल्ली जाता है, लेकिन वहाँ उसे हर आदमी अपने स्वार्थ के लिए ही उसका उपयोग करता है। जरीवाला सुदामा को अपने घर में आश्रय देकर उसे खिलाता-पिलाता है। इसके पीछे उसकी स्वार्थी वृत्ति है। वह सुदामा को गोपाल से मिलवाने का वादा भी करता है। किन्तु वह चाहता है कि उसे मंत्रीपद मिलवाने के लिए सुदामा उसकी गोपाल से शिफारिश करें यहाँ जरीवाला द्वारा सुदामा को खिलाना, पिलाना और गोपाल से मिलवाने का आश्वासन आदि उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति को आलोकित करते हैं। इस संदर्भ में जरीवाला उसकी बेटी रोजी तथा सुदामा के बीच का संवाद दृष्टव्य है -

**रोजी** : अकल ने तुम्हारी बात सुनी।

**सुदामा** : सो तो है।

**रोजी** : तुम्हें अपने घर रखा।

**सुदामा** : सो तो है।

**रोजी** : तुमनें यहाँ खूब दूध पिया, मक्खन खाया।

**सुदामा** : सो तो है।

**जरीवाला** : लेकिन इस सबकी एक शर्त है।

**सुदामा** : सो तो है। (अचानक चौंक जाता है) शर्त ? कैसी शर्त ?

**जरीवाला** : तुम्हें गोपाल से मेरी सिफारिश करनी होगी।

**सुदामा** : कैसी सिफारिश ?

**जरीवाला** : यही कि वो मुझे मंत्रिमंडल में ले लें। बहुत इच्छा हैं मंत्री बनने की।"[5]

हमीदुल्ला ने "हरबार" नाटक में स्वामीनाथन द्वारा भी स्वार्थ को उद्घाटित किया है। स्वामीनाथन स्वार्थ के लिए शंकिता, संशय तथा गंगे ड्राइवर का इस्तेमाल करता है। स्वामिनाथन एक अफसर है। वह शंकिता का उपयोग अपने कंपनी के चीफ एग्जीक्युटिव मिस्टर मलिक को खुश करने के लिए करता है। संशय आदर्शवादी युवक है, जो अपना जीवन यापन करने के लिए लाचारी को झेलता है और अपने आदर्शों की चिंगारी को स्वामीनाथन के स्वार्थों के पीछे सीने में छिपाए शंकिता के साथ मिस्टर मलिक के यहाँ जाता है। स्वामीनाथन द्वारा शंकिता और संशय को विवाहबद्ध तो किया जाता है। इसके पीछे भी स्वामीनाथन का स्वार्थ ही है,इसप्रकार स्वामीनाथन जैसे अफसर अपने अधीनस्थ नौकरों का उपयोग स्वार्थ के लिए करते

हैं। यह उनकी स्वार्थान्धता पाशविक है।

स्वामीनाथन का स्वार्थ ठिक द्रोणाचार्य जैसा है जो अपने स्वार्थ के लिए एकलव्य को गुरूदक्षिणा में अँगुठा माँगता है। अतः स्वामीनाथन भी द्रोणाचार्य से भी स्वार्थी नजर आता है। शकिता और संशय को वह नोकरी तो दिलाता है लेकिन उनका हर समय शोषण करता है और उपना ऊल्लू सीधा करता है।

"उलझी आकृतियाँ" नाटक में भी हमीदुल्ला ने स्वार्थान्यता को उल्लेखित किया है। विकास एक अफसर होकर भी स्वार्थी तथा भ्रष्टाचारी है। जो अपने स्वार्थ के लिए पत्नी सुनीता को भी बेचने के लिए तैयार है। उस का ट्रान्सफर हुआ है। वह चाहता है कि उसकी ट्रान्सफर रूकवाने के लिए दूसरा कोई उपाय नहीं है, तब वह अपनी पत्नी सुनीता को जानबूझकर ट्रान्सफर करने वाले के पास भेजना चाहता है। किन्तु उसके स्वार्थ में बार बार बलि जाने वाली सुनीता उससे विरोध करती है। किन्तु पत्नी पर अन्याय करना पति का अधिकार है इस दृष्टि से विकास उसे इस्तेमाल करता है। विकास की अत्यंत हीन स्वार्थान्धता को प्रकाशित करने वाले निम्न संवाद देखने लायक हैं -

**सुनीता** : यानी उन के पास जाने की कह रहे हो तुम ?

**विकास** : तुम्हारे लिए यह बहुत आसान काम है। आई नो यू केन डू इट, सुनीता।

**सुनीता** : कर तो सकती हूँ लेकिन करूँगी नहीं। बहुत बार तुम्हारे स्वार्थों की पूर्ति के लिए अपनी इच्छाओं की बलि दी है। अब और नहीं।

**विकास** : तुम मेरी पत्नी हो सुनीता।[6]

हमीदुल्ला ने "दूसरा पक्ष" नाटक में अभिजात्य वर्ग की स्वार्थी वृत्ति को रेखांकित किया है। इस नाटक में दिखाया गया है कि समाज का एक वर्ग धन और पद के होते हुए भी कितना स्वार्थी तथा अपराधी है। इस नाटक का वकील दीनदयाल अपने स्वार्थ के लिए बिशन की हत्या तक करता है। दीनदयाल की

बेटी शीला बिशन से प्यार करती है लेकिन बिशन उसे किडनेप करना चाहती है। बिशन का शीला के साथ ऐसा व्यवहार उसकी स्वार्थी वृत्ति का ही परिचायक है।

"अपना अपना दर्द" नाटक में भी हमीदुल्ला ने स्वार्थान्धता को लक्षित किया है। अभाव और मँहगाई के कारण मधु माता-पिता द्वारा उपेक्षित होने के बाद मामी के पास रहने को मजबूर है। किन्तु घर और सुरक्षा की ललक बिहारी के साथ रहने पर मजबूर कर देती है। यहाँ बिहारी उसका उपयोग धन कमाने के लिए करता है और अंततः उसे घर से निकाल देता है। इसी अवस्था में डॉ॰वीरेन उसे आश्रय देता है। लेकिन उसकी पत्नी के लौटते ही उसे अनावश्यक बोझ की तरह निकाल देता है। यहाँ नाटककार ने वर्तमान समाज की स्वार्थपूर्ण नीति को विश्लेषित किया है।

4· **रिश्तों का खोखलापन**

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी होने के साथ-साथ रिश्तों में भी महत्त्व रखता है। मनुष्य के अलावा सृष्टि के अन्य प्राणियों में मनुष्य की तरह रिश्तें-नाते नहीं होते। अतः मनुष्य सृष्टि के अन्य प्राणी से अलग रहा है। उसमें अपने कुटुंब बनाये हैं। उसमें माताजी-पिताजी, भाई-बहन, पति-पत्नी ऐसे अनेक रिश्तों में मनुष्य बँध गया है। परिणामतः उसमें कुछ संस्कारों के कारण उसमें नाते-रिश्ते तय हुए हैं। अतः वह जैसा रिश्ता है वेसा बर्ताव करता है। लेकिन वर्तमान युग में मनुष्य उन रिश्तों को भूल गया है, जो उन्हें कुछ करने के लिए रोक सकते हैं। वर्तमान का व्यक्ति संस्कारशून्य हो गया है। पति-पत्नी का रिश्ता जो एक-दूसरे को बंधन में बाँध देता है। वह आज खोखला बन चुका है। इसी तरह मनुष्य जाति के हर रिश्तों में आज खोखलापन आ गया है। हमीदुल्ला ने इसी वर्तमान के रिश्तों में जो खोखलपन आया है उसीको अपने असंगत नाटकों में प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में उनका "उत्तर उर्वशी" नाटक महत्व रखता है।

"उत्तर उर्वशी" नाटक में हमीदुल्ला आज के पति-पत्नी के रिश्तों में आया खोखलेपन को चित्रित किया है। इस नाटक का प्रकाशक मोना का पति है। प्रकाशक पति होकर मोना का इस्तेमाल चारे के रूप में करता है और लेखक की किताब सस्ते दाम में खरीदता है। मोना भी पति के होते हुए लेखक के साथ संभोग करती

है। जो परम्परागत पति-पत्नी के रिश्ते को एक धब्बा है। नारी अपने पति को परमेश्वर मानती थी। परपुरूष पर कभी भी वासनात्मक दृष्टि नहीं डालती थी। यहाँ मोना परपुरूष पर आकृष्ट होती है। इससे समझ में आता है कि आज पति-पत्नी के बीच का वह परम्परागत रिश्ता खत्म हुआ है। वे सिर्फ दिखावा मात्र एक-दूसरे के पास रहते हैं। इसी नाटक के स्त्री एक और पुरूष दो के संवादों से वर्तमान में चले रिश्तों का खोखलेपन का चित्र स्पष्ट होता है।

**पु·एक** : क्या सोचने लगी तुम ?

**स्त्री एक** : यही डियर कि कभी···कभी ऐसा लगता है, जसौ मैं बहुत अकेली हूँ और अकेलेपन का यह एहसास·

**स्त्री एक** : तुम्हे कैसा लगता है ?

**पु·एक** : शायद वैसा ही, जैसा तुम्हें। लेकिन मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हारे पास।[7]

यहाँ पु·एक और स्त्री एक पति-पत्नी होकर एक-दूसरे को पराया मानते हैं। ऐसा होने पर भी वे साथ-साथ रहने के लिए मजबूर हैं। किन्तु उन दोनों के विचार अलग-अलग हैं। समय काटने के लिए वह एक-दूसरे की मदद नहीं करते बल्कि वे अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार समय निकालने का बहाना कर किसी दूसरे के पास जाकर अपनी इच्छापूर्ति करते रहते हैं।

हमीदुल्ला का "उलझी आकृतियाँ" नाटक भी आज के रिश्तों के खोखलेपन को अंकित करता है। इस नाटक के विकास और सुनीता पति-पत्नी होकर एक-दूसरे के प्रति उदासिन होते हैं। विकास सुनीता का अपना स्वार्थ उपजने के लिए उपयोग करता है। अतः विकास का ऐसा करना उन दोनों के बीच का रिश्ता पति-पत्नी का न होकर व्यापारिक ही होता है। क्योंकि एक पति अपने पत्नी को किसी दूसरे के पास जाने की अनुमती कभी भी नहीं दे सकता। अतः दोनों के रिश्ते में खोखलापन ही नजर आता है।

"बर्बरीक" नाटक में भी रिश्तों का खोखलापन दिखाई देता है। डंकन की हत्या की प्रेरणा देनेवाली लेडी मैकबेथ का चरित्र आज के सास, ननद या जिठानी के रिश्ते को मुखर करता है। इनके अत्याचार से पीड़ित होकर आज भी कितनी

नववधुएँ आत्मदाह करने के लिए मजबूर होती है। इस दृष्टि से यह नाटक वर्तमान काल की चेतना और प्रासंगिकता को उल्लेखित करने मे पूर्णतः सफल रहा है।

5· अस्तित्व की विवशता

मानव अपने जीवन में विभिन्न विसंगतियों से त्रस्त है। वह समय के साथ प्रवाह प्रतीत हैं। युग संदर्भ में उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व नगण्य है। युग की समस्याओं से वह संत्रस्त होने पर भी उनसे उसे छुटकारा नहीं है। वह अपने अस्तित्व को बनाया रखना चाहता है। अन्याय, अत्याचार के बावजूद भी वह जिस, जिस प्रकार जीवन जीने के लिए विवश है। "समय सन्दर्भ" में परवश है और अस्तित्व के लिए विवश है। अस्तित्व की विवशता उसे लाचार, असहाय और खोखला बना देती है। हमीदुल्ला ने मानव की अस्तित्व की विवशता को अपने नाटकों में समर्थ रूप में चित्रित किया है।

हमीदुल्ला ने अपने "समय सन्दर्भ" नाटक में अस्तित्व की विवशता को दर्शाया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आज का हर व्यक्ति अपने अस्तित्व की खोज में भटक रहा है। इस संदर्भ में खुद हमीदुल्ला ने कहा है कि, "वैज्ञानिक उपलब्धियों के इस युग में किस प्रकार हम में से हर कोई अपने ही अस्तित्व की खोज में भटक रहा है, क्या वास्तविक रूप है हमारी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक संस्थाओं का, और क्यों कर आप-मैं, सभी न जाने किस-किस की बिसात पर यहाँ-वहाँ बैठाये हुए शतरंजी मोहरे मात्र बने हुए हैं।"[8] अतः इससे स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण वर्तमान का व्यक्ति अपने ही अस्तित्व पर विवश होकर जीवन व्यतीत करने लगा है। इस नाटक का बोस अपने अस्तित्व को देखकर घबराये हुआ दिखाई देता है। उसे मशीन और मनुष्यप्राणी के बीच का अंतर जब ध्यान में आता है तब वह खुद इन मशीनी मानवों से दूर भागने की कोशिश करता है। उसे लगता है कि एक दिन यही मशीनी मानव मनुष्यों को अपने उँगली पर नचा देगा। अतः यहाँ बोस अपने अस्तित्व को बनाये रखने का प्रयास करता है। लेकिन उसे मशीनी मानव एक यंत्र जैसा बना देता है। यह उसकी अस्तित्व की विवशता है।

"बर्बरीक" नाटक में हमीदुल्ला ने अस्तित्व की विवशता दिखाई है। इस नाटक के मैकबेथ और उसकी पत्नी द्वारा डंकन की हत्या कर दी जाती है। लेकिन शेक्सपीयर द्वारा उनकी त्रासदी के लिए अपराध की अस्वीकृति का उल्लेख करना अपने अस्तित्व पर पर्दा गिराना है। और सभ्यता की उच्चतम सीढ़ी पर अपने को खड़ा करने की कोशिश उसको अपने अस्तित्व जीने के लिए मजबूर कर देती है। किन्तु इस नाटक का बर्बरीक मनुष्य के सभी अपराध अपने उपर लेता है। इससे मालूम होता है कि, "मनुष्य अपने प्रयत्न में कभी पीछे नहीं रहता, वह अपने अस्तित्व के खतरों से निरन्तर संघर्षशील बना रहता है तथा उसे ही जिजीविषा के रूप में इस नाटक में देखने की एक सफल कोशिश की गई है।"[9] अंततः हम कह सकते हैं कि, मनुष्य अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए किसी भी स्थिति को अपनाने के लिए विवश दिखाई देता है।

"उलझी आकृतियाँ" नाट्यसंग्रह का "दूसरा पक्ष" नाटक में भी हमीदुल्ला ने अस्तित्व की विवशता को उल्लेखित किया है। इस नाटक का दीनदयाल पेशे से वकील होकर वह अपने अस्तित्व पर विवश है। वह अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए बिशन की हत्या तक करा देता है। वह मोती के माँ को भी अपने अस्तित्व के कारण बंगले से बाहर रखता है। वह उसके साथ अपनी वासना की तृप्ति तो करता है। लेकिन उसे एक पत्नी के रूप में स्वीकार करना उसे अपने अस्तित्व के खिलाफ लगता है। उसके साथ-साथ वह मोती को अपना बेटा मानने के लिए भी तैयार नहीं होता क्योंकि मोती उसकी नाजायज औलाद है, जो उसकी वासना की पूर्ति करते समय पैदा होता है। लेकिन अंत में उसे अपने नकली अस्तित्व पर मन में खीज होती है। और वह मोती को बचाने के लिए विवश होता है। उसके अस्तित्व की विवशता अंत में उसके संवादों में दृष्टिगोचर होती है। "... यह सच है कि मोती की इस अपराध भरी जिन्दगी का अपराधी मैं हूँ। जमना का जीवन मैंने बरबाद किया। बिशन की हत्या मैंने की है। अपराधी मोती नहीं है, दीनदयाल है। ....मैंने मोती को जिन्दगी की शकल में मौत दी थी, लेकिन मोती मुझे मौत की शकल में जिन्दगी दे रहा है। ऐसी मौत जो मुझे अब जिन्दगी से ज़्यादा प्यारी है। मोती को कुछ नहीं होगा, कुछ नहीं होगा मोती को..."[10]

6· **संस्कारहीनता**

अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव प्राणी सुसंस्कारित रहा है। उसके आचार, विचार, नीति, रीति अन्य जीवों से काफी महत्वपूर्ण रहे हैं। मनुष्य को बालजीवन में ही अपने माता-पिता द्वारा कुछ संस्कार दिये जाते हैं। बालक का जैसा जैसा विकास हो जाता है वैसा वैसा वह उन संस्कारों का आचरण करता रहता है। जब बालक समाज के विरूद्ध बर्ताव करने लगता है, तब उसमें संस्कारहीनता दिखाई देती है। आज के समाज में इसी संस्कारहीनता के अनेक रूप दिखाई पडते हैं। कोई भी माता-पिता नहीं चाहते कि उनका बेटा या और कोई चार उच्चका, हत्यारा बनें। लेकिन कुछ लोग आज भी ऐसे हैं जिनके पर संस्कारों का कोई असर नहीं पडता। वे पशु की तरह आचरण करते हैं। हमीदुल्ला ने इसी संस्कारहीनता का अपने असंगत नाटकों में पर्दाफाश करने की कोशिश की है। इस संबंध में उनका "दरिन्दे" नाटक महत्वपूर्ण रहा है। उसमें नाटककार ने प्रतिकात्मक पात्रों के माध्यम से मनुष्य को इसकी संस्कारहीनता के कारण वह पशुओं से भी कैसे बर्बर होने लगा है इसका चित्रण किया है।

रीता कुमार कहती है कि "दरिन्दे" के समान अन्तःकरण रखने वाले मनुष्य ही हमारे युग और समाज के कर्णधार हैं और उन्होंने अपना विस्तार हर गली, हर बाजार, हर दफ्तर, हर कारोबार में भिन्न-भिन्न रंगों और आकार में कर दिया है। यही कारण है कि "इन्सान आकाश छू रहा है। इन्सानियत धरती पर दम तोड़ रही है। हमारे चारों ओर का परिवेश सत्य रूप में नाटक की कथावस्तु में मूर्त होकर युग की विभीषिका की पीड़ा दे जाता है।"[11]

हमीदुल्ला के "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में मानव मूल्यों के अधःपतन के साथ-साथ आदमी की संस्कारहीनता को भी प्रस्तुत किया है। इसमें नाटककार ने वर्तमान जीवन में मूल्यविहीन और संस्कारशून्य होते जाने वाले मनुष्य की कटु आलोचना की है। इस नाटक के धावक जो खेल की पोशाक में मंच पर आता है और सुदामा से पागल जैसा वार्तालाप करता है। जो कि इसकी संस्कारहीनता का प्रतीक है। उसके साथ-साथ इस नाटक का स्त्री पात्र रोजी एक भारतीय नारी

होकर भी उसके आचरण में और उसकी पोशाक में भी संस्कारहीनता दिखाई देती है। भारतीय नारी अपना अंग प्रदर्शन नहीं करती थी। लेकिन यहाँ रोजी शॉर्ट कपडे पहनकर अपना अंग प्रदर्शन करती है। वह हमेशा अपने सौंदर्य का बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की कोशिश में रहती है और दूसरों को फँसाने का काम करती है। यह उसके क्रियाकलाप संस्कारहीनता जन्य है। इस नाटक का मकान मालिक भी संस्कार शून्य है, जो अपने किराये के लिए सुदामा के घर जाता है और सुदामा की पत्नी की तरफ बुरी नजर से देखता है। वस्तुतः मकान मालिक पर यह दायित्व होता है कि अपने यहाँ किराये पर रहनेवाले लोग अपने परिवार के ही लोग समझने चाहिए और इस दृष्टि से उनके साथ पेश आना चाहिए। किन्तु मकान मालिक इतना संस्कारहीन है कि वह किराया माँगने के लिए सुदामा के यहाँ जाता है और किराये के बहाने सुदामा की पत्नी पर ही डोरे डालता है। यह उसकी संस्कारहीनता की पराकाष्ठा है, जो निम्न संवादों में दृष्टव्य है -

**मकान मालिक** : तु भी तो कुछ बोलो जी ।

**पत्नी** : मैं क्या बोलू जी ?

**सुदामा** : इसकी तो बूरी नजर मेरी पत्नी पर है।

**पत्नी** : तुम चिंता मत करो जी।[12]

हमीदुल्ला के "दरिन्दे" नाटक में भी संस्कारहीनता को दिखाया है, जो वर्तमान में सामाजिक यथार्थ है। आज समाज में इतनी विसंगति बढ गयी है कि बाप-बेटे एक-दूसरे को सिगरेट माँग कर पीने लगे हैं। इस नाटक का "राहुल" अपने पिता से सिगरेट माँग कर पीता है। यह बूढा और बूढी के संवादों में दिखाई देता है। उनके "उलझी आकृतियाँ" नाटक का पात्र विकास में भी संस्कारहीनता दिखाई देती है। विकास एक कार्यालय में अफसर है। उसकी पत्नी सुनीता है। सुनीता अपने पति विकास से परवश पाती है। विकास पति-पत्नी के संबंधों में भी यांत्रिक व्यवहार करता है। उसका ट्रान्सफर हुआ है। वह अपना ट्रान्सफर रूकवाना चाहता है। तब उसका विचार है कि इस काम में सुनीता का उपयोग किया जा सकता है। वह सुनीता से कहता भी है कि वह अफसर के पास जाए और उसका ट्रान्सफर रोक दे। किन्तु सुनीता यह काम करने के लिए तैयार नहीं है। क्योंकि

हर समय उसके स्वार्थों की पूर्ति के लिए बार-बार अपने को बलि चढ़ाना उसे मंजूर नहीं है। अतः वह विकास के प्रति नफरत और घृणा से भर उठती है। और वह ऐसे संस्कारहीन, स्वार्थी और निकम्मे पति को छोड़कर हमेशा के लिए चली जाती है। "उत्तर उर्वशी" नाटक में भी संस्कारहीनता को रेखांकित किया है। इस नाटक के लेखक, प्रकाशक तथा प्रकाशक की पत्नी मोना इन सबकी संसकारहीनता पर हमीदुल्ला ने प्रकाश डाला है। उन्होंने इन तीन पात्रों के द्वारा वर्तमान समाज में बढ़ते संस्कारहीनता का पर्दाफाश किया है। ये तीनों पात्र अपने-अपने स्वार्थ के लिए मानवीय मूल्यों को तोड़कर अपना बर्ताव करते हैं। प्रकाशक की स्वार्थी वृत्ति के कारण वह लेखक को फसाना चाहता है। लेखक की भी प्रकाशक की पत्नी (मोना) पर बुरी नजर है। मोना भी मन से लेखक को चाहती है, जो कि अपना पति (प्रकाशक) सामने होकर भी वह लेखक पर बुरी नजर डालती है। वस्तुतः भारतीय नारी के लिए पति ही उसका संपूर्ण सर्वस्व माना जाता है। जहाँ पति वहाँ सती यहीं यहाँ का आदर्श है। किन्तु मोना का परपुरूष के प्रति आकर्षण उसके संस्कारहीन आचरण को मुखरित करता है।

### 7. आदमी की बेचारगी

प्रजातंत्र के इस युग में "विज्ञान अपना जहर फैला चुका है। आज जिधर भी देखें विज्ञान ही विज्ञान नज़र आता है। हर जगह जैसा-जैसा विज्ञान विकास करता जाता है, वैसा-वैसा वर्तमान का मानव दुःख से पीड़ित होता जा रहा है। आज विज्ञान के कारण मानव बेचारा बन बैठा है। उसे अपना जीवन यापन करने के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पडता है। आज सेठ-साहुकार जैसे लोग गरीब, पीड़ित आदमियों का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। इसी कारण आज का गरीब आदमी अपना जीवन यापन करनके के लिए इन्हीं लोगों के पाँव की धूल चाटने को मजबूर हो गया है। इसका कारण यह है कि उसे आज अपना जीवन व्यतीत करने के लिए किसी न किसी काम की जरूरत होती है। लेकिन आज उसे वह जो करना चाहता है वह काम नहीं मिलता। परिणामतः आज हर आदमी में बेचारगी का जहर काफी मात्रा में फैल चुका है।

हमीदुल्ला ने इसी बेचारगी को समाज के सामने लाने का सफल पर्याय उनके "हरबार" नाटक का पात्र स्वामीनाथन भी अपने नीजी स्वार्थ के लिए शकिता संशय तथा गंगे का उपयोग करता है। वह अपना जीवन यापन करने के लिए स्वामीनाथन का हर काम करते हैं। "संशय एम्·ए·होकर भी बेरोजगार होने के कारण स्वामीनाथन के दफ्तर में काम करने के लिए मजबूर है। यह संशय के संवादों में चित्रित हुआ है -

**संशय** : मेरा नाम संशय है। स्वामीनाथन साहब के दफ्तर में काम करता हूँ। अभी नया हूँ। वैसे एम·ए·हूँ। काफी दिनों से बेरोजगार था। बहुत परेशान। कोई भी काम करने के लिए तैयार था। स्वामीनाथन साहब ने ·····

**शकिता** : कृपा कर तुम्हें अपने दफ्तर में नौकर रख लिया।

**संशय** : मैं उनका बडा आभारी हूँ।

इसी तरह शकिता भी स्वामीनाथन का हर काम मानती है। वह उसके कहने पर कंपनी के चीफ एग्जीक्युटिव मिस्टर मलिक को खुश करने का काम करती है। इस नाटक का पात्र गंगे भी स्वानीनाथन की कृपा पर अपना जीवन यापन करता है। उसके बेटे की तबीयत खराब होने पर भी स्वामीनाथन उसे उसकी तनखा से काट कर कुछ रूपये नहीं देता। वह बार-बार बिन्नती करने पर स्वामीनाथन रूपयों के बदले उसे शराब पिलाता है। यहाँ गंगे गरीब होने के कारण अपने बोस की हर बात मानता है। अतः वर्तमान का हर आदमी इसी तरह बेचारगी में अपना जीवन यापन करने के लिए मजबूर दिखाई देता है। फिर भी वे वहाँ काम करने के लिए ही मजबूर है। इसी में उनकी बेचारगी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में भी उन्होंने आदमी की बेचारगी को दर्शाया है। वर्तमान में यांत्रिकता का बोलबाला होने के कारण मानव अपना मानवीय रूप भूल गया है। वह आत्मकेंद्रित बन गया है। इसी कारण उसमें स्वार्थ ही स्वार्थ पैदा हो गया है। इसी स्वार्थ ने आज हर जगह मनुष्य -ह्रास किया है। इस नाटक के पात्र मकान मालिक - जरीवाला, रोजी, सूरक्षा कर्मी आदि अपने स्वार्थ के कारण "सुदामा का जीना हराम कर देते हैं। मकान मालिक किराये के लिए सुदामा को

घर से निकाल देना चाहता है और उसकी पत्नी को घर में बंधुआ मजदूर की तरह रखना चाहता है। अतः कहा जा सकता है कि आज मनुष्य सुदामा की तरह बेचारगी का जीवन यापन करने के लिए मजबूर हो गया है। अगर वह विद्रोह करे तो उसे मार डालते हैं। आज हर जगह मनुष्य किसी न किसी के स्वार्थों का शिकार बन गया है। परिणामतः उनमें बेचारगी आ गई है।

8· **पाशविकता**

वर्तमान का मानव सभ्यता के परमोत्कर्ष पर खड़ा है लेकिन विडम्बना यह है कि उसकी सभ्यता भोंडी है। उसमें संस्कृति और सभ्यता के विकास के अलावा पाशविकता ही ज्यादातर दिखाई देती है। इसी पशुतुल्य संस्कारों के कारण मनुष्य पशुतुल्य बन गया है। आज का मनुष्य इसी कारण हिंसक, क्रूर, नीच, बर्बर और स्वार्थी बन गया है। परिणामतः वह अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी भी गंदे मार्ग को अपनाता है और मानवता का गला घोंट वह जंगली पशु की तरह अपना बर्ताव करने लगा है।

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी है, फिर भी इसी समाज को उच्च, मध्य और निम्न वर्ग में बाँट दिया है। अतः समाज के सभी स्त्री-पुरूषों में पाशविकता कम-अधिक मात्रा में होती है। फिर भी समाज के उच्च वर्ग के लोगों में पाशविकता अधिक दिखाई देती है। यह उच्च वर्ग के लोग सुविधाभोगी लोग होने के कारण मध्य तथा ज्यादातर निम्न-वर्ग के लोगों के साथ क्रूरता, निदर्यता और पाशविकता से पेश आते हैं। उनका यही आचरण मानव को पशु बनने का संकेत है। "पशु जंगली होते हैं और आदमी के भीतर भी वही आदिम वन्य संस्कार मौजूद हैं, जिसे पशुत्व कहते हैं। आधुनिक काल में आदमी ज्यादा बर्बर, स्वार्थी, नीच, क्रूर, हिंसक और घातक बना है। यही बात कहने के लिए इस युग के नाटककारों ने विभिन्न पशु-प्रतिकों का प्रयोग किया है, जिससे उसके भीतर के पशुपन को उभारा जा सके।"[14] हमीदुल्ला के नाटक इसी पाशविकता को भली-भाँति प्रस्तुत करते हैं।

हमीदुल्ला का "दरिन्दे" नाटक मनुष्य को उसकी पाशविकता और अवसरवाद के कारण पशुओं से भी बर्बर सिद्ध करता है। इस नाटक में नाटककार ने प्रतिकात्मक

पात्रों के द्वारा समाज में व्याप्त बर्बरता का पर्दाफाश किया है। इस नाटक के शेर, भालू और लोमडी द्वारा आज के स्वार्थी, अवसरवादी, क्रूर, हिंसक मानव जाति का असली रूप सामने आता है। जो लोग अन्दर से एक और बाहर से एक दिखते हैं। इस नाटक में मनुष्य की खोखली नीति और झूठे आश्वासन तथा पारिवारिक जीवन में बढ़ता अवसरवाद आदि के कारण मनुष्य किस तरह पशु बनने लगा है यह अंकित किया है। इस नाटक का "राहुल" अपनी नपुंसकत छुपाने के लिए अपने मित्र को उर्मिला के पास भेजता है। यहाँ पति-पत्नी का संबंध टूटकर संस्कारों का -हास दिखाई देता है। अतः पशु के उपर किसी संस्कारों न होना और मानवों में संस्कार होकर भी पशु के समान आचरण करना मानव को पशुतुल्य होने का ही संकेत है। इस संदर्भ में डॉ॰रीता कुमार कहती है - "मनुष्य से शान्ति की प्रार्थना अब पशु करने लगे हैं।"[15] वर्तमान जीवन में वस्तुओं का अभाव, राजसत्ता की खोखली नीति और झूठे आश्वासन, सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भी बढ़ता अवसरवाद, जहाँ पति अपने स्वार्थ के लिए पानी का चीर-हरण करने की अनुमति अपने मित्र को देता है। व्यापार में लाभ के लिए पूँजीवादियों का पशुओं से विवाह तक के लिए तत्पर होना, अपनी सामाजिक स्वतंत्रता के लिए पति की हत्या करने में तत्पर आधुनिक नारी, जीवन में आवश्यक वस्तुओं की माँग करने में राजवेत्ताओं द्वारा अपनायी गयी छल-नीति आदि मनुष्य को पशुओं से भी बर्बर सिद्ध कर देते हैं। अतुल की, "पत्नी रीत निजी सुखों के लिए अपने पति की हत्या कर देती है। अपने किए पर उसे पछतावा अथवा शर्म नहीं, क्योंकि वह जीवन के प्रत्येक क्षण को जीने में विश्वास करती है। तिल-तिल करके घुटने की अपेक्षा वह स्वातंत्र्य में विश्वास करती है। इसीलिए पाशविकता की सीमा तक पहुँचने वाले सुरेश के साथ विवाह करना वह अस्वीकार कर देती है।"[16] "दूसरा पक्ष" नाटक अभिजात्य वर्ग की यथार्थ स्थिति को दर्शाता है। समाज में एक पक्ष अपने धन और पद के कारण किसी के भी जीवन से खिलवाड कर सकता है, वह अपनी संतान को भी ठुकराकर अपना स्वार्थ जतात है। ऐसे लोग किसी की हत्या भी कर सकते हैं। इस नाटक का पात्र दीनदयाल भी एक क्रूर पशू की तरह बर्ताव करता है। वह

अपने स्वार्थ के लिए मोती के माँ के साथ खिलवाड करता है, लेकिन उसे पत्नी रूप में मानने के लिए अस्वीकृति देता है। इसके साथ-साथ वह मोती को बेटा मानने के लिए भी तैयार नहीं होता। इसकी सबसे ज्यादा पशुता यह है कि वह शिक्षित तथा पेशे से वकिल होकर भी बिशन की हत्या करता है। अतः हमीदुल्ला का यह नाटक समाज के अभिजात्य वर्ग की स्वार्थी वृत्ति और उनके सफेद लबादे के पीछे छिपी पाशविकता को रेखांकित करता है।

"उत्तर उर्वशी" नाटक द्वारा हमीदुल्ला ने वर्तमान काल में प्रेम के लिए नहीं, अपितु "धन" कमाने के लिए नारी का प्रयोग किस तरह करते हैं यह दिखाया है। एक बेकार नवयुवक उसे नौकरी पाने का माध्यम बनाना चाहता है, तो अध्यापक उससे अपने स्थानांतरण के लिए उसे माध्यम बनाना चाहता है और तीसरा फिल्म प्रोड्यूसर है जो उसे अपने चलचित्र में भूमिका अदा करने के लिए कहता है। इससे यह साबित होता है कि वर्तमान युग मे नारी का प्रेम के लिए नहीं, अपितु "धन" के लिए ही प्रयोग करना चाहता है। क्योंकि वर्तमान का मनुष्य आदत है, जो बेघर, भूखा-प्यासा, वस्त्रहीन रहने के लिए विवश है। परिणामतः उसमें पाशविकता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। इसी तरह इस नाटक का प्रकाशक अपने पत्नी द्वारा लेखक की पुस्तक खरीदना चाहता है, तो लेखक भी अवसर का फायदा लेकर उसकी पत्नी का उपभोग करता है। आज समाज में विवाहित पति-पत्नी भी सदैव अपने साथी ढूँढते हैं। अतः यह भी पशु की तरह बर्ताव है। एक उदाहरण दृष्टव्य है -

**पु·तीन** : ये क्या ?

**स्वामीजी** : वचन, कर्म, मन का अभिनय।

**पु·तीन** : काम···प्रेम रहित वासना।

**स्वामीजी** : न,न,न्····। अतु की स्थापना ।

**पु·तीन** : स्यात् की संभावना।

**स्वामीजी** : अस्ति का संरक्षण।

**पु·तीन** : नास्ति का उन्वेषण ? भूख।

**स्वामीजी** : प्यार।

**पु·तीन** : जानवर।

**स्वामीजी** : आदमी।

**पु·तीन** : आस्था टूट गयी। विश्वास छला गया।···मैं····मैं तुम्हारी हत्या कर दूँगा।

**स्वामीजी** : (क्रूर ठहाका) अहा, हाहा···हा···ह····।[17]

9· <u>अवसरवादिता</u>

वर्तमान में मानव जाति उच्च कोटि पर बैठ गयी है। फिर भी वह घिनौने हरकतें करती दिखाई देती है। आज समाज में अवसरवाद बढ गया है। अपने को उच्च समझने वाले लोग अवसर का लाभ उठाकर अपने से भिन्न लोगों का उपयोग अपने लिए करते हैं। कुछ लोग अवसर पाकर धन कमाते हैं, तो कुछ अपनी काम वासना की पूर्ति करते हैं। यह अवसरवादिता आज गली-मोहल्लों या दफ्तरों तक ही न होकर आज मठों और धर्म-स्थानों तक भी हो गयी है। हमीदुल्ला ने इसी अवसरवादिता को अपने नाटकों के माध्यम से खोलकर समाज के सामने लाने का सफल प्रयास किया है।

हमीदुल्ला का "एक और युद्ध" नाटक अवसरवाद को अंकित करता है। इसमें निर्देशक और स्वार्थपरक अवसरवादी वृत्ति अपनाते है। निर्देशक, लेखक तथा संगीतकार अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ भी कर देते हैं। इस नाटक का पात्र लेखक दरिद्री है। वह बीस सालों से लगातार लिख रहा है, फिर भी उसके पास धन जमा नहीं होता, तो वह स्वार्थपरक अवसरवाद के कारण "लक्ष्मी" से कहता है कि मुझ अभागे पर भी दृष्टि रखकर मुझे मालामाल कर डालो। असल में बुद्धि और अकल उस लेखक के पास न के बराबर है। फिर भी वह अपनी किताबें बेचकर धन कमाना चाहता है। कुछ निर्देशक भी स्वार्थी होने के कारण ऐसे लेखकों के सृजन पर खुश होकर उसको चरमोत्कर्ष पर बिठा देते हैं। उनके "अपना अपना दर्द" नाटक में भी अवसरवादी नीति पर प्रकाश डाला गया है। इस नाटक का एक स्त्रीपात्र "मधु" इसी अवसरवाद का शिकार होती है और अन्त में एक्सीडेन्ट में

मर जाती है। अभाव और मँहगाई के कारण माता-पिता के हृदय से वात्सल्य मिट गया है। ऐसे माता-पिता की मधु एक संतान है, जो माता-पिता से उपेक्षित होने पर मामी के यहाँ रहने को मजबूर हैं। किन्तु बिहारी द्वारा सुरक्षा और स्नेह की लालक उसे मिलने के कारण वह उसके पास रहने के लिए मजबूर होती है। लेकिन यहाँ भी बिहारी अवसर का फायदा लेता है और उसका उपयोग धन कमाने के लिए करता है और अंत में उसे घर से निकाल देता है। इसी दर्दनाक और शोकावस्था में डॉ॰वीरेन उसे आश्रय देता है। वीरेन अपनी पत्नी के लौटते ही उसे घर से निकाल देता है। अतः यहाँ भी उसे अवसरवादी नीति छल जाती है। परिणामतः वर्तमान में मनुष्य की अवसरवादी नीति बढ़ गयी है। वह हर वक्त इसी का इन्तजार करता रहता है। जब उसे ऐसा वक्त मिलता है जो की वह साँप की तरह डस जाता है। मधु भी इसी अवस्था का शिकार होती है।

उनके "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में भी अवसरवाद दृष्टिगोचर होता है। इस नाटक का घर मालिक सुदामा की पत्नी को अपने घर में बंधुआ मजदूर बनाना चाहता है। इसके साथ-साथ जरीवाला और मिस रोजी का चरित्र भी अवसरवादी दीख पडते हैं।

हमीदुल्ला द्वारा लिखित "दरिन्दे" नाटक में भी अवसरवादिता को विश्लेषित किया गया है। वर्तमान में आदर्श, सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीय चरित्र मिटते जा रहे हैं। इसी कारण जमाखोर तथा अवसरवादी उसका लाभ उठा रहे हैं। आज के नेता और धर्मान्ध मानव आज के मनुष्य जीवन को खोखला कर रहे हैं। हमीदुल्ला ने शेर जैसे आदमखोर की कल्पना कर आज के मनुष्यों की भर्त्सना की है। आज का मानव पशुओं से भी नीचे गिर चुका है, जो अपनी लिप्साओं की पूर्ति करने के लिए व्यक्तियों की हत्या तक करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए चन्द लोग प्रत्येक वस्तु बाजार से विलुप्त कर रहे हैं। आज के अवसरवादी नेता इसके मूल कारण बन गये हैं।

## 10· विवाहित स्त्री-पुरूषों का बेगानापन

भारतीय संस्कृति में विवाह एक महत्वपूर्ण विधि है, जिसके माध्यम से स्त्री-पुरूष दोनों भी जन्म-जन्मांतर एक दूसरे में बँधे रहते हैं। भारत में यह परम्परा पौराणिक काल से आज तक चली आई है। लेकिन परम्परागत काल में विवाह के बाद स्त्री-पुरूषों में जो संबंध स्थापित होता था वह संबंध वर्तमान काल में नहीं रहा। क्योंकि इस काल में वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आज का मानव अपना अस्तित्व ही खो बैठा है। परिणामस्वरूप आज के विवाहित स्त्री-पुरूषों में भी बेगानापन आ गया है। आज हम देखते हैं कि विवाहित स्त्री-पुरूषों में हमेशा एक-दूसरों के बीच झगडे हुआ करते हैं। इसका कारण है आज की मानवीय स्थिति जो कि मनुष्य को मानव से पशु बनानेवाली स्थितियाँ। आज की विवाहित व्यक्ति अब परिवार को बड़ी संज्ञा न होकर दो कमरों वाले फ्लैटस् हो गये है। आज की नारी अपनी जीविका खुद करने में सक्षम होने के कारण वह पुरूष के अधीन अपना जीवन-यापन नहीं करना चाहती। परिणामतः वह विवाह बंधन को तोड़कर कुछ नये आचरणकरने लगी है, जिससे पति और पत्नी में झगडे निर्माण होकर उनमें बेगानापन आने लगा है। पत्नी की तरह पति भी अपना रोष पत्नी पर जमाना चाहता है, जब यह नहीं चलता तो वह अपनी विद्रोही वृत्ति अपनाकर वैवाहिक जीवन में जहर मिला देता है।

हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में विवाहित स्त्री-पुरूष संबंधों में जो बेगानापन है इसका चित्रण मार्मिक रूप से किया है। उन्होंने आज के विवाहित स्त्री-पुरूषों को लेकर आज का मानव किस तरह बर्बर सिद्ध होने लगा है इसका चित्रण किया है। उनके "दरिन्दे" नाटक में चित्रित राहुल और उर्मिला दोनों विवाहित हैं। लेकिन पति-राहुल अपने पत्नी को पतिसुख देने में सक्षम नहीं है। इसीकारण वह अपने मित्र रवि को उर्मिला के पास भेजता है। परिणामतः उर्मिला आत्महत्या करती है। इससे मालूम होता है कि आज विवाह बंधन को भूलकर एक पति अपने पत्नी का चीर हरण तक करवा सकता है, जो उन दोनों में कैसा संबंध स्थापित हो सकता

है। वह दोनों हमेशा के लिए एक-दूसरे से जुदा हो जाते हैं।

हमीदुल्ला का "उलझी आकृतियाँ" नाटक सरकारी कार्यायल की निष्क्रियता और उसके अफसरों की अवसरवादी वृत्तियों को प्रस्तुत करता है। इसके साथ साथ वह विवाहित स्त्री-पुयषों के बेगानेपन को भी दृष्टिगोचर करता है। विकास औरसुनील जैसे अधिकारी अपने पद का दुरूपयोग कर शोषण कर रहे हैं। आज ऐसे कितने अधिकारी हैं, जो युवतियों की मजबूरियों से लाभ उठा रहे हैं। यहाँ तक की वे अपने पद को कायम रखने के लिए अपनी धर्मपत्नी को भी छोडते नहीं। इस नाटक के विकस और सुनीता पति-पत्नी हैं। उनमें भी बेगानापन दृष्टिगोचर होता है। विकास अपना ट्रान्सफर रूकवाने के लिए अपनी पत्नी सुनीता का उपयोग करना चाहता है, लेकिन सुनीता उसे नकार देती है और विकास को छोडकर चली जाती है। यहाँ सुनीता को घर-परिवार का बोझा शतरंज का मोहरा मात्र बना देता है। जिसे दूसरों की इच्छानुरूप चलना है। परिणामतः उन दोनों में पति-पत्नी का संबंध न रहकर मनुष्य की बाह्य जिन्दगी से व्यक्तिगत जिंदगी तक ही विषमता से रहा है।

हमीदुल्ला का "समय सन्दर्भ" नाटक वैज्ञानिक उपलब्धियों के अभिशाप को मुखर करता हुआ आज के सामाजिक व्यवस्था तथा पति-पत्नी के बेगानेपन पर कटाक्ष करता है। मशीनों के काय्र पर निर्भर हुआ "बोस" अर्थ और भौतिक सुखों को ही जीवन का सर्वस्व समझ बैठा है। वह अपनी सर्जना से बहुत संतुष्ट है। उसे अपने घर-परिवार तथा पत्नी का कुछ खयाल ही नहीं रहता। "उसके पास "फ्लीलिंग्स, स्नेह और विश्वास का कोई अर्थ नहीं है, "शब्द के अर्थ ही बेमानी" बन गये हैं।"[18] यह उनके संवादों से स्पष्ट होता है।

**लिली** : मैं वहाँ बैठी-बैठी अपने भाग्य को रो रही हूँ। क्या तुम्हें यह अच्छा लगता है कि तुम यहाँ दफ्तर में अकेले बैठी इस लड़की से रोमान्स करो और मैं वहाँ घर में तुम्हारा इन्तजार करती रोती रहूँ ?

**बोस** : सिचुएशन को समझने की कोशिश करो, लिली डार्लिंग

**लिली** : मैं सब समझ गयी हूँ। तुम एक यूजलेस हज्बैण्ड होते जा रहे हो। सिर्फ नाममात्र के पति।"[19]

अतः इन संवादों के माध्यम से हम देखते हैं कि आज वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण पति-पत्नी के बीच में भी प्रेम का वह रूप नहीं रहा जो पहले कभी था। हर एक पति-पत्नी के बीच अक्सर किसी न किसी बात पर झगडे हुआ करते दिखाई देते हैं। परिणामतः उनमें आज बेगानापन आ चुका है।

इसके साथ-साथ हमीदुल्ला के "उत्तर उर्वशी" नाटक में भी पति-पत्नी के बेगानेपन का चित्रण हुआ है। इसमें विवाहित स्त्री-पुरूष संबंधों का अजनबीयत, संबंधों के बेगानेपन और अन्य स्त्रियों और पुरूषों के प्रति आकर्षण तथा यौन-संबंधों की अनुचित अभिव्यक्ति है। इस नाटक के पु·एक और स्त्री एक के संवादों में आज के पति-पत्नी के बेगानेपन का चित्रण दिखाई देता है। "पति से झूठ बोलकर या कोई गहना बनाकर अपने प्रेमी या बॉस से मिलना नौकरीपेशा स्त्रियों की नियति बन गई है तो डिक्टेशन के बहाने पत्नी की अनुपस्थिति में अपनी स्टेनों को घर बुलाकर उसका उपयोग करना आधुनिक अधिकारियों की"[20] नियति के कारण पति-पत्नी में बेगानापन आने लगा है।

## 11· नपुंसकता

नपुंसकता का मनुष्य जीवन पर गहरा प्रभाव पडता है। मनुष्य को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के वर्तुल से गुजरना पडता है। जब उसे इनमें से किसी एक चीज की अपूर्ति होती है तो वह अपने जीवन को नीरस मानता है। परिणामतः उसमें मनोविकृतियाँ निर्माण होती हैं। वह इन मनोविकृतियों के कारण जीवनमूल्यों को भूल जाता है और जो मन में आता है वही करता है। हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में मनुष्य को नपुंसकता किस तरह उद्वेलित कर देती है इसका चित्रण किया है।

हमीदुल्ला के "दरिन्दे" नाटक में चित्रित पारिवारिक स्थिति में हम नपुंसकता और उसके कारण आत्महत्या को विवश पत्नी का भी रूप देखते हैं।"[21] इस नाटक

का राहुल अपनी नपुंसकता छुपाने के लिए अपने दोस्त रवि को अपने पत्नी उर्मिला के पास भेजता है। वह अपने नीजी स्वार्थ के लिए पत्नी का चीर-हरण करने की अनुमति अपने मित्र को देता है। राहुल द्वारा किया गया यह कृत्य मनुष्य को पशुओं से भी घिनौंना साबित कर देता है। उर्मिला यह सब पसन्द नहीं करती। वह अपने पति की नपुंसकता से त्रस्त होती है और अपना जीवन सामप्त करने के लिए वह तीन मंजिल इमारत के कमरे की खिडकी से नीचे कूद कर आत्महत्या करती है। राहुल को इसका कोई दुःख नहीं। जब उर्मिला की आत्महत्या के कारण कोर्ट में मामला दर्ज होता है और कानूनी कार्यवाही होती है, तब वह कोर्ट में कहता है कि मैं इसके लिए बिलकुल जिम्मेदार नहीं हूँ। उदाहरण दृष्टव्य है -

**राहुल** : .....मैंने ही रवि से ऐसा करने को कहा था। मैं उस लेबिल को अपनी पेशानी से हटा देना चाहता था, जिस पर "नपुंसक" लिखा था।..."[22]

इससे मालूम होता है कि आज के समाज में स्वार्थी व्यक्तियों के कितने रूप हैं, जो हर विवश को हलाल कर देते हैं।

"उत्तर उर्वशी" नाटक में नाटककार ने नपुंसकता जन्य प्रेम की विद्रुपता को उल्लेखित किया है। इस नाटक में एक पति अपनी पत्नी के साथ किस तरह अपना नपुंसकत्व छुपाता है, और उससे किस तरह बार्तव करने के लिए कहता है, इसका चित्रण हुआ है। इससे मालूम होता है कि आज समाज में अपने स्वार्थ के लिए तथा अपनी कमी छुपाने के लिए एक पति अपनी पत्नी को धर्म की आड से कामोपभोग में लीन कर अपना चला उद्देश्य साध्य करता है। इस नाटक का पात्र पु·तीन नपुंसक है। उसमें पौरूष्य की कमी है। वह अपनी पत्नी को घर, कपडे तथा खाना देता है लेकिन एक पति के रूप में जिम्मेदारी नहीं निभा पाता। परिणामतः उसमें जो नपुंसकता है वह छुपाने के लिए स्वामी जैसे धर्म के नाम पर कामोपभोग में लीन भ्रष्ट पुरूष का सहारा लेता है। उदाहरण दृष्टव्य है -

**स्त्री एक :** तुम समझते क्यों नहीं ? शादी के तीन साल के बाद की राते किस तरह काटी हैं मैंने ?

**पु·तीन :** तुम समझती क्यों नहीं ? स्वामीजी ने कहा है····

**स्त्री एक :** स्वामीजी, स्वामीजी, स्वामीजी। फिर वही स्वामीजी की रटा वह वैरागी क्या जाने कि एक पत्नी अपने पति से रात बिस्तर पर जाने के बाद क्या अपेक्षाएँ रखती है ? क्या तुम····वो तो नहीं···?[23]

इसप्रकार नाटककार ने नपुंसकता को दिखाकर वर्तमान समाज में फैलने वाले अनाचार तथा उसके दुष्परिणामों के ओर संकेत किया है।

12· <u>अर्थहीन भटकाव</u>

वर्तमान युग में वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आज की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और न्याय व्यवस्था पर काफी असर पडा है। आज जहाँ देखो मशीनों के कारण मानव निकम्मा और यांत्रिक बना है। वह आज अर्थ और भौतिक सुखों कोटि जीवन का सर्वस्व मान बैठा है। फलस्वरूप वह रूपये, पैसा जुटाने में अपना वक्त बिता रहा है। आज की प्रचलित जीवन प्रणाली में "अर्थ" ही सबसे महत्वपूर्ण बन गया है। परिणामतः वर्तमान का प्रत्येक व्यक्ति अर्थ प्राप्ति के साधन जुटाने में व्यस्त रहा है। वर्तमान में जीवन व्यवहारों की आधारशिला अर्थ बन गयी है। परिणामतः इसी अर्थ-प्राप्ति के लिए हर व्यक्ति अंधी दोड कर रहा है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। आज जिसके पास "अर्थ" है वह उच्च वर्ग का और जिसके पास "अर्थ" नहीं वह निम्न वर्ग का समझा जाता है। इसी आर्थिक विषमता के कारण उच्चवर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों पर अत्याचार करते हैं। आज का व्यक्ति बेकारी, बेरोजगारी, मँहगाई और उससे उत्पन्न आर्थिक विषमता के बीच फँसने के कारण अर्थहीन भटकाव कर रहा है। जिससे वह दिशाहीन जीवन जीने के लिए मजबूर हुआ है। अतः समाज में आर्थिक विषमता प्रायः रहती है, क्योंकि समाज के विभिन्न वर्गो में समता की कल्पना स्वप्न मात्र है। हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में समाज की इसी स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया है। आज व्यापारी, पुलिस, शासकीय विभाग, जमींदार, साहुकार, बन-विभाग के ठेकेदार इत्यादि शोषणकारी

वर्ग माना जा सकता है, जो गरीब, मजबूर, लाचार, बेबस लोगों पर अपना जोम जमाकर स्वार्थ साधते हैं। परिणामतः गरीब लोग अपना जीवन जीने के लिए उच्चवर्ग के पीछे अर्थहीन भटकाव कर रहे हैं। "वस्तुतः यही तो है आधुनिक समाज, जहाँ धन और अधिकार व्यक्ति को लालसाओं के दलदल में फँसा देते हैं, क्योंकि धन में कालिमा को भी श्वेत बना देने की शक्ति आ गयी है।"[24]

हमीदुल्ला के "दरिन्दे" नाटक में आज सामान्य व्यक्ति का शैशव खेल और शिक्षा की चारदीवारी के बीच ही समाप्त हो जाता है, यौवन नौकरी की खोज और विभिन्न माँगों की पूर्ति में निकल जाता है। वृध्दावस्था में केवल एक अभावग्रस्त व्यक्ति शेष रह जाता है, जो पीढ़ी-संघर्ष में खोकर रह जाता है। निम्नवर्गीय व्यक्ति खोखला हो चुका है। वह रोजी रोटी कमाने का प्रयत्न करता है, किन्तु चील जैसी परिस्थितियाँ उससे सब कुछ छीन ले जाती है। जनसाधारण के छोटे-छोटे सुखों का यही अन्त है।[25] अतः गरीब जनता भूख के कारण हवालदिल हैं। यह उनके संवादों से स्पष्ट होता है।

**लोमडी** : हवा खसाओ। हवा पर कोई राशन नहीं है।

**वि·दी·** : हमे जरूरत है।

**लोमडी** : हमें भी जरूरत है।

**शेर** : तुम्हें किसकी जरूरत है ?

**लोमडी** : एक ऐसे अर्थशास्त्री की जो रातोरात अमीरी-गरीबी का फर्क मिटा दे।[26]

अतः स्पष्ट होता है कि आज का गरीब व्यक्ति राजसत्ता के पीछे अर्थहीन भटकाव करने लगा है।

"उत्तर उर्वशी" नाटक में आधुनिक पुरुषा पारम्परिक स्वर में उर्वशी का आव्हार कर रहे हैं। क्योंकि वे मानते हैं कि दुख-दर्द मिटाने की क्षमता सिर्फ उर्वशी में ही है। एक बेकार नवयुवक हैं, जो उर्वशी द्वारा नौकरी पाने की कोशिश करता है। दूसरा व्यक्ति अध्यापक है, वह स्थानांतरण के लिए उर्वशी का उपयोग करता चाहता है। तीसरा चलचित्र निर्माता है। वह चलचित्र में भूमिका प्रदान करने के

लिए उर्वशी को आवाहन करता है। "वस्तुतः आधुनिक युग में तो प्रेम के कलिए नहीं अपितु "अर्थ" के लिए ही उर्वशी का प्रयोग हो सकता है, क्योंकि आधुनिक आदम एक सामान्य व्यक्ति है, जो वस्त्रहीन, भूखा, प्यासा, बेघरबार, रहने के लिए विवश है।"[27] अतः वह अर्थहीन भटकाव करने लगा है। इसके साथ पिशाचों लोगों का भी हमीदुल्ला ने अंकन किया है। इस नाटक का प्रकाशक उनमें से एक है, जो लेखक की पुस्तक कम कीमत में खरीदने के लिए अपनी पत्नी मोना का चारे के रूप में प्रयोग करता है। लेखक भी अवसर का लाभ उठाकर मोना का उपभोग करता है। अतः स्पष्ट है कि वर्तमान में "काम" भी अर्थ की नींव पर टिका हुआ है।

"सुदामा दिल्ली आये" नाटका का पात्र सुदामा सामान्य और सर्वहारा व्यक्ति है। वह दो वक्त की रोटी पाने के लिए लाचार है। अपनी दरिद्रता से वह त्रस्त है। वह पत्नी की सलाह नुसार अपने मित्र गोपाल से मदद माँगने दिल्ली चला जाता है, लेकिन वहाँ उसे "जरीवाला", रोजी, गोपाल से मिलवाने के बकदले उसकी असहायता का फायदा उठाना चाहते हैं। इससे मालूम होता है कि वर्तमन में मनुष्य चाहता है कि इस हाथ से दे, उस हाथ लें। अंत तक सुदामा को गोपाल मिलता ही नहीं वह हताश होकर दिल्ली से वापस आता है। इस प्रकार सुदामा अर्थहीन भटकाव के कारण टूट टूटकर बिखरा हुआ दिखाई देता है। यहीं है आज की जिंदगी की अर्थहीन भटकाव की अभिशप्ति।

13· **नारी शोषण**

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री ने पुरूष के समान प्रतिष्ठा ही प्राप्त नहीं की है, अपितु भिन्न भिन्न क्षेत्रों जैसे विज्ञान, प्रशासनिक सेवा, पर्वतारोहण, अन्तरीक्ष यात्रा एवं खेल जगत् आदि मे पुरूषों के एकाधिकार को समाप्त भी कर दिया है। फिर भी भारतीय संस्कृति पुरुष-प्रधान होने के कारण नारी को पुरूषी अधिकार में ही रहना पडता है। वह पुरूष के हाथ की कठपुतली बन गयी है। इसका कारण है कि नारी पुरूष को तन-मन-धन से प्रसन्न करने का साधन बन गयी है। फलतः नारी को आश्रिता, दासी एवं संभोग की वस्तु मानने लगे हैं। इसप्रकार नारी का

शोषण होता रहा है।

विवाहित पत्नी के होते हुए भी पुरूष जब दूसरी स्त्री के साथ शारीरिक अथवा मानसिक संबंध रखता है तो उस स्त्री को भिन्न-भिन्न नाम दिये जाते हैं, जैसे - प्रेमिका, प्रेयसी, गणिका, रखैल एवं वेश्या आदि। वर्तमान में तो नारी को कालगर्ल नाम का प्रयोग भी किया जाता है। पुरूषों ने नारी के बारे में विवेक का उपयोग नहीं किया। व उसका हर वक्त शोषण करता आया है। पुरूष नारी को अतृप्त प्यास की तुष्टि का साधन मात्र मानता है। इसके साथ-साथ आज धन कमाने का साधन भी नारी बन गई है। प्रयोगधर्मी नाटककार हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में नारी की इसी स्थिति का उल्लेख किया है।

"उलझी आकृतियाँ" नाटक में वर्तमान के अधिकारी लोग अपने पद का दुरूपयोग कर किस तरह मजबूर युवतियों का शोषण करते हैं इसका चित्रण है। नाटक में विकास और सुनील अपने पद का दुरूपयोग कर मिस बेला तथा सुनीता का शोषण करते हैं। बेला का चरित्र और कार्य-व्यापार इसी करूण सत्य का परिचायक है। सुनीता को विकास अपनी ट्रान्सफर रूकवाने के लिए खुद ट्रान्सफर करनेवाले के पास जाने को कहता है। अतः यहाँ पुरूषों के स्वार्थी वृत्ति के कारण वह अपने पत्नी को किसी ओर के पास भी भेजता है। फलतः नारी का अस्तित्व शतरंज के मोहरे के अलावा कुछ भी नहीं है।

"दरिन्दे" नाटक में उर्मिला पुरूष के स्वार्थो की बलि होती है। पति राहुल अपनी नपुंसकता छुपाने के लिए तथा उर्मिला को खुश करने के लिए अपने मित्र रवि को उसके पास भेजता है। उर्मिला पतिव्रता होने के कारण यह सब सह नहीं पाती। वह आत्महत्या कर देती है। यह कैसी विडम्बना है कि एक पति अपने स्वार्थ के लिए पत्नी का चीर-हरण करने की अनुमति किसी दूसरे को देता है। वहाँ पत्नी के मन, इच्छा का कोई विचार नहीं किया जाता सिर्फ उसका शोषण किया जाता है।

"उत्तर उर्वशी" नाटक की उर्वशी को वर्तमान नारी के रूप में दिखाया गया है। इस नाटक के नवयुवक, अध्यापक तथा फिल्म प्रोड्युसर आदि अपने-अपने स्वार्थों के लिए उर्वशी का आव्हान करते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि आज की नारी सुख सुविधाएँ जुटाने का साधन मात्र बन गई है। वर्तमान में तो यह त्रासदी और विसंगति है कि उर्वशी को कल्पा, रूपसिया के स्थान पर व्यापारिक वस्तु के रूप में ही देखा जाने लगा है। अतः नारी धर्म, अर्थ और काम के त्रिकोण के अलावा काम को ही सर्वोपरि माना है। "प्रकाशक और लेखक के संदर्भ में भी नाटककार ने नारी की एक "कमोडिटी" के रूप में ही देखा है। प्रकाशक अपने साथ अपनी पत्नी मोना को भी इसीलिए लाता है ताकि वह लेखक को अपनी अदाओं और अपने रूपार्षण से मोह ले और सस्ते दामों में उसे अच्छी रचना मिल जाये। अपने इस उद्देश्य का सिद्धि के लिए वह पुनः एकान्त लाभ का अवसर देना भी अनुचित नहीं मानता।"[28] अतः स्पष्ट है कि वर्तमान की नारी का शोषण स्वार्थसिद्धि के वस्तु के रूप में होने लगा है।

हमीदुल्ला ने "ख्याल भारमली" नाटक में भी नारी शोषण का चित्रण किया है। भारमली की कथा सामन्ती काल मे नारी के शोषण उसके अंतर्मन की वेदना और गर्व-संघर्ष को स्पष्ट करती है। पुरूष नारी का शोषण हर काल में करता आया है। एक नारी पुरूष की निकटता से एक अधिकार पाती है, जिसे वह अपने अस्तित्व के साथ जोड़ना चाहती है, लेकिन पुरूष ने हमेशा उसको धोखा दिया है। उसका शोषण किया है। उसे एक मछली की तरह सुखी रेत पर तडपने के लिए मजबूर किया है। भारमली को शासक मालदेव द्वारा भोगा जाता है। जब उसे मादेव द्वारा पुत्ररत्न होता है तब मालदेव उसे अपने यहाँ से निकाल देता है, क्योंकि उसकी कोख का जन्मा परम्परा के अनुसार शासक का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता था। क्योंकि भारमली एक दासी थी। उससे भारमली राजा को छोड़कर बाघा के सम्पर्क मे रहने लगती है। जब मालदेव को यह पता चलता है, तो मालदेव स्वामी जैसे जो सत्ताधारी और सत्ता के विरोधी दोनों के संरक्षक थे। उसे भारमली को बाघा से छुडाकर लाने को कहता है। स्वामी भारमली को भोग्य के रूप में रहने के लिए विवश करता है। यही नारी शोषण सामन्ती काल से आज तक चलता आया है।

"जैमती" नाटक बगड़ावत देवनारायण महागाथा राजस्थान की एक लोकगाथा है। इस नाटक के जैमती का चरित्र नारी शोषण को स्पष्ट करता है। उस काल में भी नारी शोषण होता था। नारी को चारदीवारों में ही रहना पडता था। लेकिन जैमती वैभवशाली बूढे राजा को पति के रूप में अस्वीकार कर देती है। इससे मालूम होता है कि नारी को उसके इच्छा के विरूद्ध रहने के लिए भी मजबूर किया जाता था, उसे अपने इच्छा से अपना हमसफर भी चुनने का अधिकार नहीं था, इससे पता चलता है कि नारी का शोषण हर काल में किस तरह होता आया है और हो भी रहा है।

"हरबार" नाटक की नारी शंकिता भी आज के नारी शोषण की शिकार हुई दिखती है। शंकिता को उसकी इच्छा के विरूद्ध रहना पडता है। उसे अपने जीवन का कुछ भी नहीं लगता सिर्फ वह रक्तपिपासु लोगों की हवस को मिटाने का काम करती है, क्योंकि "स्वामीनाथन" एक ऐसा आदमी है जो अपने स्वार्थों के लिए शंकिता जैसी स्त्रियों का उपयोग करती है। परिणामतः वह निष्प्रयोजन शून्य में देखते चेहरे पर शारीरिक और मानसिक यातनाओं के कटु अनुभवों की तलखी बन गयी है। अतः स्वामीनाथन और शंकिता का रिश्ता व्यापारिक रहा है, इससे मालूम होता है कि आज भी नारी का शोषण होता रहा है।

"बर्बरीक" के लेडी मैकबेथ का चरित्र वर्तमान परिस्थितियों में देखें तो इसके साथ आज कितनी मालती, मंजु, गोमती, उषा जैसी नववधुएँ पुरूषों के अत्याचार की शिकार होकर मिट्ठी का तेल डालकर आत्महत्या नहीं करती अपितु एक नारी दूसरी नारी (सास, ननद, जिठानी) के अत्याचारों से पीडित होकर आत्मदाह करने के लिए मजबूर होती दिखाई देती है। अतः स्पष्ट है कि नारी भी अपने स्वार्थ अहम् आदि के लिए दूसरी नारी पर अत्याचार करती है। हमीदुल्ला आधुनिक बोध के नाटककार होने के कारण उन्होंने अपने नाटकों में नारी शोषण को अनेक कोनों से चित्रित किया है।

## 14· कार्यालयों की निष्क्रियता

वर्तमान में दफ्तरों की दुरावस्था हो चुकी है। आज सरकारी दफ्तरों में तो उसके कार्यकर्ताओं की अवसरवादी नीतियों के कारण साधारण व्यक्ति अपने जिन्दगी से ऊब चुके हैं। वह किसी भी कार्यालय में काम के लिए जाता है तो उसे अपना काम करने के लिए टिबील के नीचे से अफसरों, क्लर्क, चपरासी सभी को रिश्वत देनी पडती है। वे लोग इतना करने पर भी कोई काम वक्त पर नहीं करते। आज तो कोई भी कार्यालय का कार्यकर्ता कार्यालय में समयानुसार नहीं आता। अगर वह कार्यालय में आता है, तो वह कार्यालय का काम छोडकर कुछ दूसरा ही करने में मग्न रहता है। "यह आवश्यक नहीं कि जो व्यक्ति अपनी नौकरी से संतुष्ट हो, वह महत्वाकांक्षी भी हो जाए, क्योंकि एक सीमा तक सुखी और संतुष्ट होकर वह आलसी तथा निष्क्रिय भी हो सकता है, क्योंकि उसे ज्ञात है कि उसकी नौकरी सुरक्षित है। यही सरकारी तथा प्राईवेट नौकरी का अन्तर सामने आ जाता है। सरकारी नौकरी अधिक सुरक्षित है, अतः सभी वहाँ रिश्वत इत्यादि का आशा रखने लगते हैं।"[29] परिणामतः वर्तमान के कार्यालयों के कार्यकर्ता भ्रष्ट आचरण करने लगे हैं।

इसके साथ-साथ वर्तमान के कार्यालयों में हम देखते हैं कि आर्थिक स्थिति से दुर्बल होने के कारण कोई नारी कार्यालय में काम करने जाती है तो उसे अवसरवादी अफसर लोग फँसाकर अपनी वासना की पूर्ति भी करते हैं। आज व्यक्तिगत जिन्दगी में ही नहीं, प्रशासन और समाज मे भी अर्थव्यवस्था का बोलबाला है। सरकारी दफ्तरों की यह दशा हो गई है कि वहाँ रिश्वत अथवा ऊपरी आय ही सबकुछ है। रिश्वत मिलते ही वे कठिन से कठिन काम कर देते हैं। आज तो कार्यालयों की इतनी दुरावस्था हो गई है कि उसके कागजात तथा अन्य वस्तुएँ भी अपने जगह पर नहीं मिलते। जब उनका काम निकलता है तो उसे ढूँढकर भी नहीं मिलती। इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में कार्यालयों की स्थिति कितनी घिनौनी हो चुकी है।

हमीदुल्ला का "उलझी आकृतियाँ" नाटक सरकारी कार्यालय की निष्क्रियता को प्रस्तुत करता है। इस नाटक का विकास, सुनील, वर्माजी, बेला, रामदीन आदि के द्वारा वर्तमान सरकारी कार्यालय की यांत्रिक और संवेदनशून्य कार्यपद्धति को उभारा है। नाटक के आरम्भ में ही वर्माजी कार्यालय में पाँव फैलाये पान चबा रहे हैं और सिगरेट पी रहे हैं। उसके साथ-साथ मिस बेला नेल-पॉलिश लगा रही है। रामदीन एक चपरासी है, जो स्टुल पर ऊँघते बैठा है। यह बात सरकारी कार्यालयों के नियमों में बँधे जीवन और कार्यालय की निष्क्रियता को विडम्बनात्मक ढंग से लक्षित कर देता है।

"एक और युद्ध" नाटक में भी कार्यालयों की निष्क्रियता को प्रस्तुत किया है। जब आशा सेक्रिटेरियल चलकर शहिदों की विधवाओं के स्कीम्स के बारे में पता करने के लिए विधवा सुशीला को लेकर जाती है, तब उन्हें उस कार्यालय में चपरासी, स्टेनों, छोटे बाबू, बड़े बाबू और अफसर सभी उनके साथ संवेदनशून्य कार्यपद्धति अपनाते हैं। उसके बाद वह उसे एक चिठ्ठी लिखने के लिए कहता है। आशा चिट्ठी लिखकर देती है तो उसे स्टेनों, बडे बाबू आदि के पास सिर्फ घुमना पडता है लेकिन उसे अफसर से शिघ्र नहीं मिलाते। जब वह अफसर से मिलकर पता करती है तो अफसर बडे बाबू के पास भेजता है। इससे उल्लेखित होता है कि वर्तमान कार्यालयों में कितनी निष्क्रियता आ चुकी है।

15· **स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में बदलाव**

"स्त्री-पुरुष के मध्य एक प्राकृतिक आकर्षण है जो इन दोनों को एक-दूसरे की ओर आकृष्ट करता है। एक अदृश्य शक्ति इन दोनों की बरबस एक-दूसरे की ओर खींचती रहती है। यदि यह आकर्षण समाप्त हो जाए तो संभवतः जीवन नीरस तथा आकर्षणहीन हो जाए। समय के अनुसार स्त्री-पुरुषों के संबंधों का आधार भी परिवर्तित होता रहा है।"[30] वैदिक काल में स्त्री अपने इच्छित पुरुष का वरण कर सकती थी। मध्य युग में वह पुरुष की तृप्ति एवं भोग की वस्तु बन चुकी। अतः इस काल में स्त्री-पुरुष के लिए अलग-अलग मानदण्ड थे। फलतः स्वतंत्रता

के पश्चात स्त्री-पुरूष संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं। पाश्चात्य सभ्यता के संपर्क ने उनमें उन्मुक्तता एवं व्यभिचारी वृत्ति ही आई है। पाश्चात्य सभ्यता के संपर्क ने उनमें उन्मुक्तता एवं व्यभिचारी वृत्ति ही आई है। परिणामतः उनमें स्वैरिता, परस्त्रीगमन, उन्मुक्त प्रेम तथा प्रयोगात्मक विवाह जैसे अनेक संकल्पनाएँ जन्म ले चुकी हैं। इन अभिवृत्तियों के मूल में वर्तमान की परिवर्तनशील परिस्थितियों और यौन-संबंधों तथा विवाह के संदर्भ में बदलते जीवनमूल्यों को हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में लक्षित किया है।

उनका "उत्तर उर्वशी" नाटक प्रतिकात्मक धरातल पर स्त्री-पुरूष संबंधों की बहुस्तरीय व्याख्या करता है। उन्होंने उर्वशी को सनातन नारी के रूप में और पुरूखा को सनातन पुरूष के रूप में वर्तमान संदर्भ में दिखाया है। आधुनिक प्रेम में वह भावनात्मक रूप समाप्त हो चुका है जो कभी था। आज प्रेम एक वस्तु की स्थिति बन चुका है। अतः आज उसे भुनाकर सुख-सुविधाएँ जुटाई जाने लगी हैं। हमीदुल्ला ने नाटक के आरम्भ में एक उर्वशी और तीन पुरूखाओं के द्वारा इसी तथ्य की अभिव्यक्ति की है। आज व्यक्ति के लिए प्रेम गौण और स्वयंसिद्धि महत्वपूर्ण वस्तू बन गई है। इस नाटक अपने साथ लगता है कि वह अपने अदाओं और रूपाकर्षण से लेखक को मोहले और सस्ते दामों में उसे अच्छी रचना मिले। अतः यहाँ स्त्री-पुरूष संबंधों में काफी बदलाव दिखाई देता है। हर वक्त अपने स्वार्थ के लिए अच्छा अवसर देखकर उसका लाभ उठाना चाहता है। स्त्री और पुरूष जो पहले थे वह अब नहीं रहे उनमें वर्तमान परिस्थितियों ने काफी बदलाव आया है।

"हमीदुल्ला ने "उत्तर उर्वशी" में स्त्री-पुरूष संबंधों को एक और कोन से भी देखा है। जिसे मानस-मैथुन का नाम दिया जा सकता है। लेखक, प्रकाशक और प्रकाशक की पत्नी मोना के मानसिक उदेलन के माध्यम से नर-नारी के पारस्परिक आकर्षण और अप्राप्त को भोगने की मानसिक इच्छा का इस संदर्भ में अच्छा रूपायन हुआ है। प्रकाश की पत्नी मोना जहाँ अन्तर्मन में लेखक के प्रति आकर्षक है, वहाँ लेखक भी प्रतिशोध भाव से परिचालित होने के कारण उसे भोगना चाहताहै।"[31]

इसके साथ-साथ इस नाटक में स्त्री-पुरूष संबंधों की अजनबीपन, संबंधों के बेगानेपन और अन्य स्त्रियों अथवा पुरूषों के प्रति आकर्षण एवं अनुचित यौन-संबंधों की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। नौकरीपेशा स्त्रियों अथवा पुरूषों में यौन-संबंध का रोचक चित्रांकन है। पति से झूठ बोलकर अपने प्रेमी से मिलना आज के नौकरीपेशा स्त्रियों की नियति बन चुकी है तो पति परमेश्वर भी पत्नी की अनुपस्थिति में अपनी स्टेनो को घर बुलाकर उपभोग करते हैं।यही आधुनिक नर-नारी के बिच संबंध स्थापित होने लगे है। जिसको हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है।

16· **मोहभंग**

आज का व्यक्ति स्वार्थ की परिधि से परे जाकर कुछ देख ही नहीं पाता। परिणामतः उसमें मोह बढ गया है। पैदल चलने वाले को साईकील से चलना अच्छा लगता है। और साईकील पर सवार होने वाले को मोटरसाईकील से। इससे पता चलता है कि आज के मानवों में मोह बढ़ गया है। वह मोह के कारण कुछ करना चाहता है लेकिन उसका हमेशा मोहभंग होता आया है। इसका कारण है आज का मानव यांत्रिक व्यवस्था में आदमी का वह मूल रूप भूल गया है जो पहले कभी था। आज का मानव मोह के कारण क्या करता है और उसे क्या करना चाहिए यह भूल गया है। फलतः उसका हर जगह मोहभंग होने लगा। हमीदुल्ला ने इसी मोहभंग की स्थिति को अपने में अभिव्यक्ति दी है।

उनके "समय सन्दर्भ" नाटक का पात्र "बोस" इसी मोहभंग का शिकार हुआ है। उसे लगता है कि मशीनी मानव ही हर गरीब की आँख के आँसू पोछ देगा। इसलिए वह मशीनी मानव का निर्माण करता है। अतः उसे लगता है कि मशीनी मानव द्वारा ही सुखसुविधा जुटाई जा सकती है। इसीकारण बोस अपनी सर्जना से संतुष्ट और गर्वित है। लेकिन एक दिन उसके द्वारा निर्मित वही मशीनीमानव अपने शोषण और अधिकार के प्रश्नों को लेकर विद्रोह खड़ा करते हैं। परिणामतः बोस की इसी सृजन की उपयोगिता उसका मोहभंग कर देती है। हमीदुल्ला ने आधुनिक वैज्ञानिकों का यांत्रिक सभ्यता की मोहभंग की स्थिति को बड़े ही मार्मिक रूप में उपस्थित किया है।

हमीदुल्ला का "सुदामा दिल्ली आये" नाटक भी मोहभंग को उल्लेखित करता है। इस नाटक का सुदामा गरिबी से पीड़ित हैं। सुदामा अपने मित्र गोपाल से मदम माँगने दिल्ली चला आता है। लेकिन दिल्ली में उसे जरीवाला अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए सुदामा का उपयोग करना चाहता है। जरीवाला चाहता है कि सुदामा गोपाल से उसकी शिफारिश करे कि जरीवाला को मंत्रिमंडल में स्थान दें। तभी जरीवाला सुदामा को गोपाल से भेट कर देगा। सुदामा को यह पसन्द नहीं आत। वह निराश होता है। आखिर गोपाल उसे भेंटता तक नहीं। अतः यहाँ सुदामा गरीब होने के कारण एक मित्र दूसरे मित्र को मिल भी नहीं पाता। सुदामा कुछ पाने की इच्छा जरूर रखता है लेकिन उसका वहाँ मोहभंग होता है और वह पहले से भी अधिक करून बन जाता है।

17· <u>मूल्यहीनता</u>

वर्तमान युग में मूल्य विघटन होता रहा है। पुराने मूल्य टूट रहे हैं और उनकी जगह नये मूल्य स्थापित हो रहे हैं। पाप और पुण्य की पुरानी मान्यताएँ आज बदल चुकी हैं। आज नैतिकता के जगह अनैतिकता आ गई है। आज मा मानव समाजशास्त्रीय मान्यताओं को भूल गया है। "समाजशास्त्र के मान्यताओं के अंतर्गत मूल्य या जीवनमूल्य वह आदर्श जीवन पद्धति है, जिसका पालन करना किसी भी समाज के लिए आवश्यक समझा जाता है।"[32] वास्तव में समाज में स्वीकृत जीवनमूल्य ही व्यक्ति को दिशा देने का कार्य करते हैं। किन्तु यह समाज के जीवनमूल्य शाश्वत और स्थिर न होने के कारण सामाजिक मूल्य युग, काल और देश-विदेश के परिस्थितियों के कारण हमेंशा बदलते आये हैं। आज की नारी पतिव्रता धर्म का पालन करना जीवन का आदर्श नहीं मानती। वह अपने पति को परमेश्वर नहीं मानती इसके साथ पहलेवाली नारी की तरह वह चार दीवारी में घुट-घुटकर मरना अस्वीकार करती है। वह पुरूष की तरह हर जगह अपना बर्ताव करने लगी है।

वर्तमान युग में मूल्यहीनता इतनी बढ़ चुकी है कि पारिवारिक संबंधों में भी विघटन आ चुका है। आज भाई-बहन, पिता-पुत्र, भाभी-देवर, पति-पत्नी,

माँ-बेटी, भाई-भाई, श्वशुर-बहू, माँ-बेटी आदि के संबंधों में भी बदलाव आया है। इनमें अकेलापन, अजनबीपन, संबंधहीनता की भावनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। स्त्री-पुरूषों के संबंधों में भी गोपनीयता की जगह उन्मुक्तता आ चुकी है। फैशन के कारण भी वर्तमान का मानव कपड़े तथा मानव से विचित्र जीवन पद्धति अपना रहा है। यही उसकी पद्धति भी मूल्यविघटन की द्योतक है। "दरिन्दे" नाटक में हमीदुल्ला ने दरिन्दे अर्थात् हिंस्त्र पशू नहीं जो मानव से दूर जंगल में होते हैं। उनका आशय है शीलवान सुसंस्कृत मानव जो बस्तियों से दूर जंगलों में रहने वाले हिंस्त्र पशू की तरह बर्ताव करता है। आज जीवन के मूल्य को निर्माण करने वाली मानव जाति ही उपर से सुसंस्कृत दिखाई देता है किन्तु अंदर से आदिम पुरखों जैसी ही है। वर्तमान मानव सुसंस्कृत होकर भी पशु की तरह गंदी हरकत अपने स्वार्थ के लिए करता है। मनुष्य से शांति की प्रार्थना अब पशु कर रहे हैं। अपनी सामाजिक स्वतंत्रता के लिए पति की हत्या करने में वर्तमान नारी, राजनेताओं की छल नीति आदि परम्परागत मूल्य को भूलकर ही होने लगा है।

मूल्य विघटन की दृष्टि से "सुदामा दिल्ली आये" नाटक भी लक्षणीय है। इस नाटक के पात्र घर मालिक, जरोवाला तथा रोजी आदि परम्परागत मूल्यों को भूल चुके हैं। घर मालिक सुदामा की पत्नी को अपने घर में बंधुवा मजदूर रहने को कहता है, जो मूल्य के विरूद्ध है। पहले मनुष्य दूसरो के स्त्री को देवी के रूप में देखते थे। किन्तु आज का मनुष्य उसे केवल भोग्या के रूप में देखता है। यह उसका मूल्यहीनता की ही परिणीति है। इस नाटक के अन्य पात्र जरीवाला तथा रोजी भी परम्परागत मूल्य को भूल चुके हैं। जरीवाला रोजी को अपनी बेटी की तरह मानता है लेकिन सुदामा को खुश करने के लिए उसे भेजता है। रोजी भी सुदामा के पास परम्परागत नारी के रूप में न जाकर उसके गले में पड़ती है तथा उसको खुश करने की कोशिश करती है, जो मूल्य के विरूद्ध है। इस नाटक में नाटककार ने प्रस्तुत किया है कि मूल्यविहीन और संस्कारशून्य होते जाने का प्रतिरोध सबकी साझी लड़ाई बन चुकी है। आज का आम आदमी विसंगतियों के बीच किस तरह जीवन व्यतीत करता है इसका चित्रण प्रस्तुत नाटक में किया है।

सामाजिक विषमता, राजसत्ता की दुमुँही नीति, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में फैला भ्रष्टाचार और अवसरवाद, स्त्री-पुरूष संबंधों में आया भोगवाद आदि मूल्य विघटन की कई स्थितियों की अभिव्यक्ति हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में की है।

## स मा हा र

उपरोक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि -

× ऊपरी तौर से मनुष्य जीवन जितना सुंसगत दिखाई देता है, उतना ही आंतरिक तौर से असम्बद्ध तथा विंसगत है। हमीदुल्ला अपने नाटकों में मानव जीवन की विंसगति को अनिवार्य मानते हैं। जिसे उन्होंने नग्न यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है।

× मनुष्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विसंगति को हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में स्पष्ट किया है।

× मनुष्य जीवन परिवर्तनशील है, अतः आधुनिक युग में जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में भ्रष्टाचार तथा संस्कारहीनता के कारण प्रतिमान विद्यमान नज़र आते हैं और उनके कारण समाज के हर क्षेत्र में मूल्यहीनता दिखाई देती है।

× हमीदुल्ला ने अपने असंगत नाटकों में वर्तमान के नेता, अफसर की अवसरवादी वृत्तियों के कारण आज मानवीय जीवन कितना पशुता के समान बन गया है इसको दर्शाया है।

× हमीदुल्ला ने अपने असंगत नाटकों में आज के यांत्रिक युग के कारण मनुष्य जीवन में किस तरह आर्थिक विपन्नता, परवशता आ गई है इसका चित्रण किया है।

× आज यांत्रिक युग के कारण बुद्धिजीवी युवा वर्ग दिशाहीन होकर किस तरह नपुंसक आचरण करने लगा है इसको हमीदुल्ला ने अपने विसंगत नाटकों में व्यक्त किया है।

## संदर्भ


1· हमीदुल्ला - "सुदामा दिल्ली आये", (लेखकीय निवेदन), प्र·सं·1992

2· हमीदुल्ला - "दरिन्दे" नाट्यसंग्रह में संग्रहीत नाटक "अपना अपना दर्द", दूसरा सं·1987, पृ·138

3· हमीदुल्ला - "दरिन्दे", सं·1987, पृ·71

4· मंजुला दास - "साठोत्तरी हिन्दी नाटक में त्रासद तत्व", प्र·सं·1988, पृ·125

5· हमीदुल्ला - "सुदामा दिल्ली आये", प्र·सं·1992, पृ·40

6· हमीदुल्ला - "उलझी आकृतियाँ", सं·अक्तुबर 1973, पृ·226

7· हमीदुल्ला - उत्तर उर्वशी, प्र·सं·1979-80, पृ·57-58

8· हमीदुल्ला - "समय सन्दर्भ" (मुखपृष्ठ) प्र·सं·अक्तुबर 1972

9· हमीदुल्ला - "बर्बरीक", (विजय कुलश्रेष्ठ, "हमीदुल्ला का रंगजगत्", लेख) सं·अप्रैल 1986, पृ·43

10· हमीदुल्ला - "दरिन्दे", नाट्यसंग्रह में संग्रहीत दूसरा पक्ष नाटक, दूसरा सं·1987, पृ·117

11· डॉ·रीताकुमार - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष सन्दर्भ में, सं·1991, पृ·124

12· हमीदुल्ला - "सुदामा दिल्ली आये", पृ·19

13· हमीदुल्ला - "हरबार", 1986, पृ·19

14· संपा·डॉ·विजयकांतधर दुबे - हिंदी नाटक : प्राक्थन और दिशाएँ, (डॉ· नरनारायण राय, "स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक : प्रवृत्ति और विश्लेषण" लेख), प्र·सं·1985, पृ·69

15· डा·रीता कुमार - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में, सं·1991, पृ·124

16· डॉ·मंजुला दास - साठोत्तरी हिन्दी नाटक में त्रासद तत्व, प्र·सं·1988, पृ·125

17· हमीदुल्ला - "उत्तर उर्वशी", प्र·सं·1979-80, पृ·67

18· डॉ·रीता कुमार - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में, सं·1991, पृ·120

19· हमीदुल्ला - "समय संदर्भ", प्र·सं·1973, पृ·15

20· डॉ·नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी, "हिन्दी नाटक : बदलते आयाम", प्र·सं·1987, पृ·247

21· डॉ·मंजुला दास - साठोत्तरी हिन्दी नाटक में त्रासद तत्व, प्र·सं·198, पृ·125

22· हमीदुल्ला - "दरिन्दे" दूसरा सं·1987, पृ·33

23· हमीदुल्ला - "उत्तर उर्वशी", दूसरा सं·1983, पृ·64

24· डॉ·मंजुला दास - "साठोत्तरी हिन्दी नाटक में त्रासद तत्व", प्र·सं·1988, पृ·125

25· वही, पृ·126

26· हमीदुल्ला - "दरिन्दे" दूसरा सं·1987, पृ·54

27· डॉ·मंजुला दास - साठोत्तरी हिन्दी नाटक में त्रासद तत्व, प्र·सं·1988, पृ·115

28· डॉ·नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी - हिन्दी नाटक : बदलते आयाम, प्र·सं·1987, पृ·246-247

29· डॉ·मंजुला दास - साठोत्तरी हिन्दी नाटक मतें त्रासद तत्व, प्र·सं·1988, पृ·257

30· डॉ·नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी - हिन्दी नाटक : बदलते आयाम, प्र·सं·1987, पृ·47

31· वही, पृ·47

32· डॉ·शेखर शर्मा - समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक, प्र·सं·1988,पृ·114